Vol. No. 01, Sl. No. 01

ब्रह्मावर्त निर्झरिणी

Brahmavart Nirjharni

प्रवेशांक

महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका

Articles & Creative Writings Published in both Hindi & English

स्थापना वर्ष – 1970

2022

ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज

मन्धना, कानपुर – 209 217

फोन : 0512-2780372 :: मो० : 9336718062 :: ई-मेल : **bvpg.mandhana@yahoo.in**

वेबसाइट : **www.bvpgc.co.in** :: ट्विटर : **@Bvpgcollege** :: फेसबुक : **brahmavartpg college**

Ownership : The Principal, Prof. (Dr.) V.K. Katiyar, Brahmavart PG College, Bithoor Road, Mandhana, Kanpur

Published by Brahmavart P.G. College, Mandhana, Kanpur

Laser Type Setting & Printed by Satguru Graphics & Printers, Kidwai Nagar, Kanpur

प्रार्थना

वीणावादिनी वर दे।
प्रिय स्वतन्त्र रव, अमिय मन्त्र नव, भारत में भर दे, वर दे।
वीणावादिनी वर दे।
काट अन्ध उर के बन्धन स्तर, बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर।
कलुष भेद तम हर प्रकाश भर, जगमग जग कर दे, वर दे।
वीणावादिनी वर दे।
नव-गति, नव-लय ताल छन्द नव, नवल कण्ठ, नव जलद मन्द रव।
नव-नभ के विहग वृन्द को, नव-पर नव स्वर दे, वर दे।
वीणावादिनी वर दे।

ब्रह्मावर्त निर्झरिणी
Brahmavart Nirjharni

Patron
Prof. (Dr.) V.K. Katiyar

Editor
Dr. C.K. Shastri

Magazine Name : ब्रह्मावर्त निर्झरिणी / Brahmavart Nirjharni

Multidisciplinary Journal

Artricles & Creative Writings published in both Hindi & English Languages

Owner & Patron : Prof. (Dr.) V.K. Katiyar, Principal, Brahmavart P.G. College, Mandhana, Kanpur

Contact :

E-mail : bvpg.mandhana@yahoo.in

Website : https://bvpgcollege.in/

Published By : Brahmavart P.G. College, Mandhana, Kanpur

Contact :

E-mail : bvpg.mandhana@yahoo.in

Website : https://bvpgcollege.in/

Aim & Scope : The **"Brahmavart Nirjharani"**, as a creative as well as academic initiative taken by Brahmavart P.G. College, Mandhana, Kanpur, is a multidisciplinary, annual journal for research articles and creative writings in both Hindi and Eglish languages. Currently, the journal invites articles in the domain of multidisciplinary research areas and creative writing in both Hindi and English. Apart from these, research works in literature, culture, religion, translation, ethnicity and nationalism, sign language, science, technology and software development related are also encouraged in the above-mentioned languages. It intends to inspire writers, poets and artists to create new works that contribute to the cultural heritage of the region. It aims to encourage critical thinking and intellectual discussions on various topics related to Indian culture and history. The authors strictly adhere to the conditions proposed by the editorial board.

About Us : "Brahmavart Nirjharani" is a magazine dedicated to create intellectual temperament and cultivate the creative faculty of the young minds. Our mission is to promoting cultural heritage, fostering intellectual discourse, and providing informative content. We strive to provide high-quality content, encourage critical thinking, or inspire positive change. Our team of experienced editors is committed to delivering insightful analysis and engaging creativity.

Editorial Board (2022)

Name	Institutional Designation	Department/ Subject	Official Postal Address	E-mail Address
Prof. (Dr.) V.K. Katiyar	Principal	Physics	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	vkkatiyar_kn05@ csjmu.ac.in
Dr. Chand Kishor Shastri	Assistant Professor	Sanskrit	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	shreechandrat3034 kn10@csjmu.ac.in
Dr. Amit Kumar Dubey	Assistant Professor	Hindi	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	amitkumart3340kn10 @csjmu.ac.in
Dr. Bappa Adhikari	Assistant Professor	English	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	bappaadhikarit3767 kn10@csjmu.ac.in
Shri Dinesh Kumar	Assistant Professor	Economnics	Brahmavart P.G. College Mandhana, Kanpur-209217	dineshkumarsis13131 kn10@csjmu.ac.in

Brahmavart Nirjharni

Multidisciplinary Journal

Vol. No. 01 Sl. No. 01

आनंदी बेन पटेल
राज्यपाल उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राजभवन
लखनऊ - 226 027

12 जुलाई, 2022

सन्देश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई के ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, मन्धना कानपुर द्वारा सत्र 2022–23 की वार्षिक ई–पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयीन पत्रिका संस्थान की उपलब्धियों का दस्तावेज होने के साथ ही विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहयोगी होती है। ये पत्रिकाएं विद्यार्थियों में रचनात्मक और साहित्यिक प्रतिभा को अभिव्यक्ति भी प्रदान करती हैं।

मैं ई–पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन
(आनंदी बेन पटेल)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@gov.in वेबसाइट : www-upgovernor.gov.in

ALL INDIA FEDERATION OF UNIVERSITY & COLLEGE TEACHERS' ORGANISATIONS
(A.I.F.U.C.T.O.)

Dr. Vivek Dwivedi
National Vice-President

Associate Professor
Brahmanand College, Kanpur-208004

Ref. :

Date : 28/07/2022

:: सन्देश ::

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, अपनी वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' के प्रवेशांक का ई-प्रकाशन करने जा रहा है। शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य है, छात्र-छात्राओं के अन्तर्निहित गुणों/प्रतिभाओं का विकास एवं संवृद्धि। पाठ्यक्रम आधारित और उपाधिपरक शिक्षा से उनके विषयगत ज्ञान का विकास होता है और पाठ्येतर क्रिया-कलापों से आन्तरिक गुणों का विकास होता है। पत्रिका महाविद्यालय के सभी सदस्यों के नवीन परिचय का आधार प्रस्तुत करती है और लेखों/कविताओं आदि के माध्यम से अनुभव को समृद्ध करती है।

मुझे आशा और विश्वास है, विद्वान सम्पादक-मण्डल के नेतृत्व में प्रकाशित होने वाली पत्रिका महाविद्यालय के गौरव व प्रतिष्ठा के उन्नयन का कार्य करेगी।

(डॉ० विवेक द्विवेदी)
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
AIFUCTO

Residence : 26, M.I.G., Chandra Vihar, Kanpur - 208 002 • Mob. :9415126888, 9935327474

डॉ० रिपुदमन सिंह

क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
सी0एस0जे0एम0विश्वविद्यालय परिसर
कानपुर मण्डल कानपुर
मो0नं0—9412183382

15 जुलाई, 2022

सन्देश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, मन्धना, कानपुर अपनी वार्षिक पत्रिका ''ब्रह्मावर्त निर्झरिणी'' का संयुक्तांक प्रकाशित करने जा रहा है। महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका में छात्र/छात्राओं/शि?ाक्षकों/कर्मचारियों/बु(िजीवी जन के विचारों की अभिव्यक्ति होती है तथा लेखन के प्रति उनकी रुचि जाग्रत होती है साथ ही साथ उनकी शैक्षिक एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है। वार्षिक पत्रिका में प्रकाशित लेख व रचनायें एक स्वस्थ परम्परा का बीजारोपण करेंगे तथा समय–समय पर छात्रों/व्यक्तियों का मार्गदर्शन करेंगे।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के पठन से छात्र–छात्राओं में समाजिकता, राष्ट्रीयता, मानवीयता व दायित्वबोध जैसे नागरिकता गुणों का विकास होगा वहीं उनमें सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति, सहभागिता, कल्पनाशीलता आदि भावों को बल मिलेगा।

वार्षिक पत्रिका ''ब्रह्मावर्त निर्झरणी'' के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

डॉ० रिपुदमन सिंह

सेवा में,
डॉ० पुष्पेन्द्र कुमार सिंह
सम्पादक
ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, मन्धना,
कानपुर नगर।

ब्रह्मावर्त डिग्री कालेज समिति

मन्धना, कानपुर - 209 217

प्रेम नारायण गुप्त
अध्यक्ष

वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एड०'
सचिव / मन्त्री / प्रबन्धक

पत्रांक :

दिनांक :

सन्देश

हमारे महाविद्यालय की पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' के प्रकाशन पर मुझे अत्यधिक हर्ष एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। मुझे आशा है कि महाविद्यालय की पत्रिका छात्रों, प्राध्यापकों तथा गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों में न केवल अपने विचारों की अभिव्यक्ति के प्रति रुचि पैदा करेगी अपितु महाविद्यालय में निरन्तर हो रही गतिविधियों को जनसामान्य तक पहुँचाने का पुनीत कार्य भी करेगी।

महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' न केवल छात्रों की रचनात्मकता से पूर्ण हो बल्कि यह नवीन सोच के साथ कार्य करते हुए शैक्षिक नवाचार तथा महाविद्यालय के समस्त कार्यक्रमों की जानकारी का दस्तावेज साबित हो..... इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मैं सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार को इसके प्रकाशनार्थ अनेकशः बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि पत्रिका का प्रकाशन प्रतिवर्ष निर्बाध होता रहे।

वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'
सचिव/मन्त्री/प्रबन्धक
ब्रह्मावर्त डिग्री कालेज समिति
मन्धना, कानपुर

प्राचार्य की कलम से............

ब्रह्मावर्त परास्नातक महाविद्यालय की स्थापना सन् 1970 में ब्रह्मावर्त क्षेत्र के शिक्षाविदों एवं मनीषियों द्वारा इस उद्देश्य से की गई थी कि इस क्षेत्र के निवासियों को उच्च शिक्षा के लिए कहीं और भटकना न पड़े। ब्रह्मावर्त कालेज अपनी स्थापना के समय से ही अपने स्थापन उद्देश्य की प्राप्ति हेतु सतत् प्रयत्नशील एवं क्रियाशील है। 1970 में बी०ए० से आरम्भ होकर अद्यतन बी०कॉम०, बी०एस-सी० और परास्नातक स्तर के अध्ययन की सुविधा उपलब्ध करा रहा है। महाविद्यालय में वर्तमान में एन०सी०सी०, एन०एस०एस० और रोवर्स रेन्जर्स की इकाई सफलतापूर्वक कार्य कर रही है। इस श्रंखला में छात्रों के सृजनात्मक कौशल को ऊँचाइयों पर ले जाने हेतु सत्र 2022-2023 से महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' के प्रकाशन का निश्चय किया है। अभी पत्रिका ई-पत्रिका का स्वरूप प्रदान किया गया है।

'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' विद्यार्थियों की रचनात्मकता से पूर्ण होने के साथ, संस्थान का शैक्षणिक, खेलकूद, प्लेसमेण्ट, सांस्कृतिक तथा सामाजिक गतिविधियों का लेखाजोखा भी प्रस्तुत करेगी। शिक्षा के साथ-साथ खेल, साहित्य एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है।

महाविद्यालय के प्राण हमारे छात्र/छात्राओं ने जब कभी शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में महाविद्यालय का नाम उज्ज्वल किया, मैंने प्रसन्नता और ऊर्जा का अनुभव किया। विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में बी०ए० के छात्र प्रखर शुक्ल को मा० राज्यपाल, उ०प्र० द्वारा स्वर्ण पदक प्राप्त करके एवं अन्तर्महाविद्यालयी निबन्ध प्रतियोगिता में छात्रा मानसी तिवारी को प्रथम स्थान प्राप्त करके महाविद्यालय को गर्वित किया है। प्राचार्य के रूप में कार्य करते हुए हमेशा यह जरूर सोचा कि हमारा महाविद्यालय कैसे और बेहतर हो सके। छात्र/छात्रायें कैसे सर्वश्रेष्ठ कर सकें और शिक्षकगण अपनी उपलब्धियाँ बढ़ा सकें। यह सब इसलिए भी क्योंकि इनसे मुझे मानसिक सुख के साथ -साथ सामाजिक मान भी प्राप्त होता है और मान प्राप्ति की चाह मानव की चिरस्थायी कमजोरी है। मैं इस कमजोरी से अछूता नहीं रह सकता।

हमारे छात्र/छात्राओं ने विश्वविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त किए, विभिन्न महाविद्यालयों में जाकर प्रतियोगितायें जीतीं, सभी बधाई, स्नेह और आशीर्वाद के पात्र हैं।

मैं आशा करता हूँ कि 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' छात्रों के ज्ञान कौशल की अभिव्यक्ति का माध्यम बनने के साथ ही महाविद्यालय की अतिउत्तम शिक्षा की ओर बढ़ते कदमों की प्रवाहिका भी बने।

प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार
प्राचार्य

सम्पादक की लेखनी............

किसी भी उच्च शिक्षण संस्थान में प्रकाशित पत्रिका उस संस्थान का दर्पण होती है, जिसमें महाविद्यालय में स्थापित तथा सृजनात्मकता के विभिन्न क्षेत्रों में पोषित विद्यार्थी प्रतिभा का प्रस्फुटन, प्रकीर्णन आम जनमानस के माध्यम से वृहत्तर समाज में पहुँचता है। पत्रिका रूपी दर्पण के माध्यम से महाविद्यालय की समग्र झलक प्राप्त होती है, जिससे शिक्षण संस्थान को प्रेरणा तथा मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' का प्रकाशन महाविद्यालय का समग्र सामाजिक प्रक्षेपण है, जिससे महाविद्यालय की शैक्षणिक के साथ-साथ सह-शैक्षणिक गतिविधियों का प्रसार उन विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगा,जो अभी तक इन गतिविधियों से अपने को अलग रखते है। युवा विद्यार्थी की रचनात्मक प्रतिभा के जगत में इस राष्ट्र का भविष्य अन्तर्निहित है। छात्रों के द्वारा प्रकाशनार्थ प्रदत्त प्रविष्टियाँ कुछ सीमा तक उत्साहवर्द्धक रही हैं, जिससे उनमें निहित सृजनात्मकता को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भावी भारत के निर्माण का एक वृहत् योजनाबद्ध दस्तावेज है, जिसकी समझ प्रत्येक युवा विद्यार्थी को होनी ही चाहिए, जिससे वह अपने आप को इस राष्ट्रनिर्माण के अभिन्न अंग के रूप में देख सके। ई-पत्रिका के कुछ आलेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुख्य बिम्ब के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के उदारमना महानुभावों श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट' सचिव एवं प्रबन्धक तथा श्री प्रेम नारायण गुप्त अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति एवं अन्य पदाधिकारियों, जिनके संरक्षण में महाविद्यालय संचालित हो रहा है और उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है, से प्राप्त मार्गदर्शन एवं महाविद्यालय के प्राचार्य, प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार के प्रेरणा से प्रकाशित हो रहे इस अंक 'ब्रह्मावर्त निर्झरिणी' को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। अतएव बहुत आदर के साथ यह सारस्वत उपहार आप सभी के लिए ई-माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

माननीय राज्यपाल महोदया, क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, कानपुर मण्डल, प्रबन्धक महादय, प्राचार्य महोदय तथा अन्य मनीषियों द्वारा जो आशीर्वचन हमें प्राप्त हुए हैं, उनके प्रति सादर कृतज्ञता का भाव अर्पित करते हैं।

मेरे समस्त पाठक सुधीजन से अनुरोध है कि पत्रिका में गुणवत्ता एवं टंकणगत शुद्धता का प्रयास किया गया है तथापि त्रुटि दृष्टिगत होने पर सकारात्मक भाव से नजरअंदाज करेंगे। अन्त में सभी के प्रति सतत् मंगलकामना!

प्रो० पुष्पेन्द्र कुमार सिंह
प्रधान सम्पादक

कार्यकारी सम्पादक की कलम से.........

यह सत्य है कि महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका उस महाविद्यालय का दर्पण होती है, जहाँ छात्रों का सर्वांगिक विकास किया जाता है। इसी उद्देश्य से ब्रह्माण्ड की धुरी कहे जाने वाले ब्रह्मावर्त क्षेत्र में ज्ञान का मन्दिर ब्रह्मावर्त पी.जी. कॉलेज उच्च शिक्षक संस्थान के रूप में स्थापित है, जहाँ विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न प्राचार्य एवं कुशल प्राध्यापकों द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाता है और सुदूर क्षेत्र तक महाविद्यालय द्वारा प्रदान की जा रही ज्ञान की धारा को प्रवाहित करने के लिए महाविद्यालय के आदरणीय प्राचार्य जी द्वारा वर्ष 2022 में **'ब्रह्मावर्त निर्झरणी'** नामक पत्रिका का प्रकाशन कार्य प्रारम्भ कराया गया। सम्पादक मण्डल द्वारा महाविद्यालय के विभागों, प्राध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं से लेख प्राप्त किये गये। पत्रिका हेतु महामहिम राज्यपाल उत्तर प्रदेश लखनऊ, क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी कानपुर मण्डल कानपुर एवं आदरणीय सचिव महोदय-प्रबन्ध समिति, ब्रह्मावर्त पी.जी. कॉलेज, मन्धना, कानपुर के शुभ संदेश भी प्राप्त हो गये थे किन्तु प्रकाशन कार्य शेष था कि अपरिहार्य कारणों से कार्यकारी सम्पादक मण्डल का गठन किया गया, जिसके द्वारा प्रकाशन कार्य को अन्तिम रूप दिया जा रहा है। इस प्रकाशन कार्य हेतु महामहिम राज्यपाल, मा. क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, आदरणीय सचिव महोदय-प्रबन्ध समिति, आदरणीय प्राचार्य जी, महाविद्यालय के समस्त गुरुजनों एवं छात्र-छात्राओं को अपना आशीर्वाद एवं सहयोग प्रदान करने के लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

चन्द्रकिशोर शास्त्री
कार्यकारी सम्पादक

सम्पादक मण्डल

संरक्षक
प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार

कार्यकारी सम्पादक
चन्द्रकिशोर शास्त्री

सदस्य
डॉ० अमित कुमार दुबे

सदस्य
डॉ० बप्पा अधिकारी

सदस्य
डॉ० दिनेश कुमार गौतम

सदस्य
डॉ० दिव्या भदौरिया

सदस्य
डॉ० आरती दीक्षित

सदस्य
डॉ० अर्चना सक्सेना

सदस्य
श्री अंकुर मिश्र

Contents

1.	कवक : मित्र और शत्रु	डॉ० दिव्या भदौरिया, असि० प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान	1
2.	आधुनिक शिक्षा	डॉ० रचना मिश्रा प्रवक्ता, अर्थशास्त्र	3
3.	E-Commerce Strategies for New Business	डॉ० आरती दीक्षित असि० प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग	4
4.	बसन्त आया	प्रखर शुक्ल	5
5.	परमवीर डाक्टर्स	शिवांगी सिंह, एम०ए० पूर्वार्द्ध	6
6.	जी ना पायेंगे	प्रखर शुक्ल	7
7.	मिशन शक्ति से शक्ति वन : पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में	चन्द्रकिशोर शास्त्री सहा० आचार्य, संस्कृत	8
8.	Departmental Report : English Department	Bappa Adhikari Asst. Professor, Deptt. of English	12
9.	गीता का उपदेश विद्यार्थियों के लिए	अंकुर मिश्र, पुस्तकालयाध्यक्ष	13
10.	वृक्ष ही जीवन है	शिवांगी सिंह, एम०ए० पूर्वार्द्ध	19
11.	हुंकार हो	गीता मिश्रा	20
12.	समेटे हुए	प्रखर शुक्ल	21
13.	राजनीति विज्ञान विभाग : एक दृष्टि	डॉ० पुष्पेन्द्र कुमार सिंह प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग	22
14.	Departmental Report : Physics Department	Dr. Dinesh Kumar Singh Department of Physics	23
15.	शिक्षाशास्त्र विभाग : रिपोर्ट	डॉ० अर्चना सक्सेना शिक्षाशास्त्र विभाग	24
16.	संस्कृत विभाग : विभागीय रिपोर्ट	चन्द्रकिशोर शास्त्री संस्कृत विभाग	25
17.	हिन्दी विभाग : वार्षिक विवरण	डॉ० अमित कुमार दुबे हिन्दी विभाग	26
18.	समाजशास्त्र विभाग : एक रिपोर्ट	डॉ० सरला त्रिपाठी समाजशास्त्र विभाग	27

19.	Career Opportunity in the Field of Chemistry	Brajesh Kumar Asst. Professor, Deptt. of Chemistry	28
20.	वनस्पति विज्ञान विभाग : एक अवलोकन	डॉ० दिव्या भदौरिया वनस्पति विज्ञान विभाग	29
21.	Plants as a Proptectant Against the Insect Pests for Stored Grains	Dr. Sharda Tripathi Department of Zoology	31
22.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020	डॉ० अर्चना सक्सेना असि० प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग	32
23.	सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समिति : 2021–22	डॉ० दिव्या भदौरिया सदस्य, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समिति	33
24.	विकार : विजय – ज्ञानी तथा अज्ञानी का भेद	मानसी तिवारी, बी०ए० द्वितीय वर्ष	34
25.	देश–दुनिया की कुछ बेहतरीन कविताएं	डॉ० अमित कुमार दुबे असि० प्रोफेसर, हिन्दी विभाग	38
26.	अवगुण रूपी विष	प्रियंका, एम०ए० प्रथम वर्ष	58
27.	राष्ट्रीय नवजागरण और जयशंकर प्रसाद जी के नाटक	मानसी, एम०ए० द्वितीय वर्ष	60
28.	हास्य व्यंग्य	प्रखर शुक्ल, एम०ए० प्रथम वर्ष	61
29.	समुद्र	जूली, बी०एस–सी० द्वितीय वर्ष	61
30.	प्रेम	आशुतोष अवस्थी	62
31.	बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ	शिवांगी राजपूत बी०एस–सी० प्रथम वर्ष	62
32.	नया समाज	ऋषताम्बरी, बी०एस–सी० तृतीय वर्ष	63
33.	कोशिश कर	अनुष्का यादव बी०एस–सी० प्रथम वर्ष	64
34.	अनमोल वचन	मानसी, एम०ए० द्वितीय वर्ष	64
35.	पावस ऋतु	रोशनी,बी०एस–सी० प्रथम वर्ष	65
36.	Love	Ashish Kamal B.Sc. IIIrd Year	66

कवक : मित्र और शत्रु

डॉ० दिव्या भदौरिया
असि० प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान

वनस्पति प्रकृति का वह शास्त्र है, जो जीव का ज्ञान और जीवन विज्ञान की सीख देता है। ऐसा इसलिए कहा जा सकता है कि पूरे ब्रह्माण्ड में जीवन का पहला संकेत ही नहींअन्तिम सत्य कि कुछ भी सम्पूर्ण नहीं है, का सबक वनस्पति अपने में समेटे है। आम जनजीवन में किसी वस्तु के खराब होने का संकेत और प्रमाण होता है, उसमें फफूंद (Fungus) लग जाना। परन्तु बात यहीं खत्म नहीं होती, यहाँ से शुरू होती है। फफूंद एक ऐसी वनस्पति है, जो हमारे लिए हानिकारक ही नहीं लाभदायक भी है। इनका पहला और सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि संसार में अपमार्जक के रूप में कार्य करते हुए फफूंदी बेकार पड़ी कार्बनिक वस्तुओं को सड़ाकर समाप्त कर देती है। ये वस्तुएं आक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन, फास्फोरस आदि में टूटकर वायुमण्डल में फैल जाती है। इनके द्वारा जगत में से कचरा हटा दिया जाता है। फफूंद या कवक एक प्रकार के जीव हैं, जो अपना भोजन सड़े–गले कार्बनिक पदार्थों से प्राप्त करते हैं। ये संसार के प्रारम्भ से ही जगत में उपस्थित हैं। कवक जीवों का एक विशाल समुदाय है, जिसे साधारणतया वनस्पतियों में वर्गीकृत किया जाता है। इतना ही नहीं इसका उपयोग खाने की चीजें और दवा बनाने तथा फसल को बेहतर करने में भी किया जाता है।

पर्यावरण में नमी रहने पर खासतौर से बारिश के मौसम में अक्सर बासी रोटी, अचार, मुरब्बे, चमड़े आदि पर छोटे–छोटे सफेद रेशे पैदा हो जाते हैं। इसे फफूंद (Fungus) लगना कहते हैं। ये रेशे काले, पीले और नीले रंग के भी हो सकते हैं। इन्हें सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से देखने से पता चलता है कि इनमें धागे जैसी संरचनाएं हैं। इन धागों के दो हिस्से होते हैं। एक हिस्सा माइसिलियम (Mycellium) जड़ों की तरफ फैलकर खाद्य पदार्थ से भोजन लेता है और दूसरा हिस्सा गोल–गोल गेंदनुमा होता है, इस गोल हिस्से में फफूंदी पैदा करने वाले बीजाणु (Spores) होते हैं। हवा में फैले इन बीजाणुओं को जब गर्म और नमी वाले स्थान में खाने की वस्तुएं मिलती हैं, तो ये उन पर जमा हो जाते हैं और बढ़कर नई फफूंदी को जन्म देते हैं। जैसे कि किसी वस्तु पर फफूंदी जमती है, वह वस्तु खराब हो जाती है। फफूंदी एक प्रकार से परजीवी पौधे होते हैं। इनके अंगों में भोजन बनाने वाला हरित पदार्थ (Chlorophyll) नहीं होता, इसलिए भोजन के लिए इन्हें चीजों पर निर्भर रहना पड़ता है। कवक सम्भवतः सबसे अधिक व्यापक प्रजाति है। इसकी लगभग 80 से 90 हजार जातियाँ मौजूद हैं। जलीय कवक में एकलाया (Achlaya), सैप्रोलेग्निया (Saprolegnia), मिट्टी में पाये जाने वाले म्यूकर (Mucor), पेनिसिलियम (Penicillium), एस्परजिलस (Aspergillus), फ्यूजेरियम (Fusarium) आदि; लकड़ी पर पाए जाने वाले मेरुलियस लैक्रिमैंस (Merulius lachrymans); गोबर पर उगने वाले पाइलोबोलस (Pilobolus) तथा सॉरडेरिया (Sordaria); वसा में उगने वाले यूरोटियम (Eurotium) और पेनिसिलियम की

जातियाँ हैं। ये वायु तथा अन्य जीवों के शरीर के भीतर या उनके ऊपर भी पाए जाते हैं। वास्तव में विश्व के उन सभी स्थानों में कवक की उत्पत्ति हो सकती है, जहाँ कहीं भी इन्हें कार्बनिक यौगिक की प्राप्ति हो सके। कुछ कवक तो लाइकेन (Lichen) की संरचना में भाग लेते हैं, जो कड़ी चट्टानों पर, सूखे स्थान में तथा पर्याप्त ऊँचे ताप में उगते हैं, जहाँ साधारणतया कोई भी अन्य जीव नहीं रह सकता। हमारे जीवन में खमीर या कुकुरमुत्ता जैसे खाने योग्य फफूंद के पदार्थ आसानी से उपलब्ध हैं। इसके अलावा फफूंद का इस्तेमाल रोगों से छुटकारा दिलाकर फसलों का उत्पादन बढ़ाता है। ब्रेड बनाने, बियर (Bear), शराब निकालने और पनीर तैयार करने में फफूंदी को प्रयोग में लाया जाता है। कार्बनिक तेजाब (Organic Acid), पाचक रस (Enzymes), विटामिन (Vitamins), और एंटीबायोटिक्स (Antibiotics) बनाने में भी फफूंदी का प्रयोग होता है।

फफूंद का इस्तेमाल रोगों से छुटकारा दिलाते हुए फसलों का उत्पादन बढ़ाता है। जैविक फफूंद का घोल फसलों में लगने वाले 200 प्रकार के कीट को खत्म कर सकता है। मिट्टी में ट्राइकोडर्मा नामक फफूंद (Trichoderma Fungus) पाया जाता है, जो मिट्टी और बीजों में पाए जाने वाले हानिकारक तत्व को नष्ट कर पौधे को स्वस्थ रखने में सहायक होता है। यह एक प्रकार का जैविक फफूंदीनाशक है, जो पौधे की वृद्धि के लिए उपयुक्त माना जाता है। पौधों में रोग से बचाव के लिए किसान रासायनिक दवाओं का इस्तेमाल करते हैं, इससे फसलों में विष का कुछ न कुछ प्रभाव रह जाता है। धान, गेहूँ, दलहनी, औषधीय, गन्ना और सब्जियों की फसल में प्रयोग करने से उसमें लगने वाले फफूंदजनित तना गलन, उकठा आदि रोगों से निजात मिल जाती है। इसका प्रभाव फलदार वृक्षों पर भी लाभदायक है।

जैविक फफूंद का घोल यानी मेटाराइजियम घोल बनाकर किसान भाई कीटनाशक की तरह प्रयोग कर सकते हैं, इस मित्र फफूंदी के अन्दर फल–फूल एवं अनाज वाले फसलों को नुकसान पहुँचाने वाले विभिन्न कीटों की लगभग 200 प्रजातियों को खत्म करने की क्षमता है। इस जैविक फफूंदी के प्रयोग से मनुष्य एवं जानवरों को किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती है एवं पर्यावरण भी विषैले तत्वों से बचा रहता है।

किसान इसका प्रयोग धान, गेहूँ, मक्का, गन्ना, कपास, बाजरा, सोयाबीन, आलू, टमाटर, गोभी, भिण्डी, मिर्च, मूँगफली, मूली, प्याज, सरसों आदि विभिन्न प्रकार की फसलों में कर सकते हैं। इस मित्र फफूंद को मुख्यत: कद्दू के लाल कीट, दीमक, मिली बग, माइट, भूरा भूदका, हरा भूदका, सफेद लट, भूरा माहों एवं थ्रिप्स जैसे चूषक कीटों को नष्ट करने के लिए किया जाता है। यह मित्र फफूंद कीट की किसी भी अवस्था जैसे अण्डा, इल्ली, प्यूपा एवं प्रौढ़ सभी को खत्म करने की क्षमता रखता है। इसके प्रयोग के बाद 4 से 10 दिन के अन्दर कीट के ऊपर एक सफेद सतह के रूप में फैलकर एक जाल बनाकर इसे खत्म करता है। इस फफूंदी का प्रयोग पानी में घोल बनाकर छिड़काव करके अथवा मिट्टी में खाद के साथ मिलाकर किया जा सकता है।

आधुनिक शिक्षा

डॉ० रचना मिश्रा
प्रवक्ता, अर्थशास्त्र

आधुनिक युग विज्ञान का युग है , विज्ञान के द्वारा हो रहे चमत्कार जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अमिट छाप छोड़ रहे हैं। घर हो या बाहर, यातायात हो या चिकित्सा, कृषि हो या शिक्षा विज्ञान के द्वारा लाई गयी मशीनें नित्य नये-नये उपकरण दिन-प्रतिदिन परिवर्तन को प्रोत्साहित कर रहे है। शिक्षा के क्षेत्र में भी हम प्रतिवर्ष नये नये परिवर्तन व प्रयोग होते देख रहे हैं परिणामस्वरूप शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य सर्वांगीण विकास न होकर केवल एक ही उद्देश्य रह गया है, येन केन प्रकारेण अधिक अंक अर्जित करके जीविकोपार्जन करना, और श्रेष्ठता सिद्ध करना, विद्या ददाति विनयं की परिकल्पना से हम बहुत दूर हो गये है। कुछ विसंगतियाँ जो आधुनिक शिक्षा की गुणवत्ता को विकृत कर रही है। व्यवसायीकरण को आधुनिक युग में नैतिक मूल्य संस्कार प्राचीन भारतीय संस्कृति की गरिमामयी गुरू शिष्य परम्परा सदैव के लिये विलुप्त हो गयी है।

अभिभावकों के पास पैसा है, साधन है, अतः बच्चों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति ही सामाजिक प्रतिष्ठा के द्योतक बन गये हैं। ढाई-तीन वर्ष की बहुत उम्र में उसे विद्यालय में प्रवेश दिया जाता है, ऐसी स्थिति में उससे समुचित तरह से विकसित होने का अवसर ही छिन जाता है, रूसो और प्लेटो जैसे दार्शनिकों के विचार बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है, आज के युग में एक कामकाजी माँ के प्यार भरे आंचल से महरूम बचपन बच्चों में भावनात्मक विकास नहीं होने देता, अभिभावकों के पास आर्थिक दौड़ में शामिल होने की मजबूरी है। माँ-बाप दोनों ही इस दौड़ में शामिल हैं। उपेक्षा होती है, भावी पीढ़ी की जो सही मार्गदर्शन, स्नेह के अभाव में भटकती है, बड़े होकर वह अपने जन्मदाता को असहाय छोड़कर विदेशों में और पैसा कमाने निकल जाते हैं।

समाज में असहाय बुजुर्ग भावनात्मक रूप से उपेक्षित हैं। समाज में संवेदनहीनता दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, लोग उसका शिकार हो रहे है। यदि हम चाहते हैं कि मानवीय मूल्यों का मशीनीकरण न हो, यदि हम चाहते हैं कि सदियों से मान्य नैतिक मूल्य पुनः स्थापित हों, समाज को सुदृढ़ नेतृत्व देने वाली कर्मठ भावनाशील पीढ़ी तैयार हो तो हम सब को विचार-मंथन करके प्रजातान्त्रिक तरह से नयी क्रांति लानी होगी। उसके लिये शिक्षा में शुचिता, नैतिकता को पुनः स्थापित करना होगा, सरकार, समाज, अभिभावक व शिक्षक मिलकर एक नये समाज का निर्माण भावी पीढ़ी के रूप में कर सकते हैं, यदि समय रहते हम न चेते तो निश्चित ही आर्थिक उन्नति अवश्य होगी लेकिन नैतिक मूल्यों में हम पिछड़ जायेंगे।

E-Commerce Strategies for New Businesses

Dr. Arti Dixit
Asst. Professor, Department of Commerce

E-Commerce in India is one sector that triumphed over Covid-19, unlike the rest. While the world was struggling to look for ways to survive amidst the pandemic, e-commerce companies, old and new were making efforts to reach their customers. These apps were catering to necessities eg: Online pharmacies (when people were worried about the medicine deliveries amidst the lockdown, eg. Tata 1mg) etc. The pandemic has also hastened the adoption of technology and online commerce among the less tech-savvy and first time users. According to Hurun research, India now has 54 unicorns, 33 more than in 2020, while the United Kingdom has 39 unicorns, 15 more than a year ago. India led the way for emigrant unicorn creators, followed by China, Israel and Russia. There is no shortage of ideas, technology and funding in today's time.

E-Commerce and E-business are the terms being used interchangeably in all the literature on e-commerce or the internet transactions.

The difference between the terms of e-commerce and e-business is also significant. E-commerce is defined as buying and selling over the digital media. Whereas E-business is a wider term, it is any process of business conducted electronically or over a computer network, in addition to e-commerce. E.g. when using computer network for company's internal purpose, production, marketing, etc, its e-business and not e-commerce.

***Research Methodology**

Extensive research has been done into the trends shaping into e=commerce so that the new entrants in the field or those looking to extend or expand their online presence.

The pandemic has affected the economy and life negatively but for the e-commerce sector, which has thrived well all across the globe, especially in India. Following China and the United States, India has the third largest online shopping base in 2020, with 140 million people.

Digital Literacy in India is on the rise, and the world is looking at India to make investments in E-commerce. The giants like Amazon, Microsoft and Google entered India and have been changing the fabric of E-commerce in India. The new entrants or those existing businesses which wish to expand have to ponder and work around the following pointers.

A. Investment in E-commerce drivers

India has been a ground for Foreign Direct Investments(FDI) where giants like Facebook(now Meta), Google and Microsoft all have pledged huge funds towards Digital India Initiative. Google on Feb 1, 2022 invested $700 million in Bharti Airtel, to support the growth in smartphones and connectivity.

The investments to make better smartphones and increase connectivity is an indicator of the healthy time to be online in India. The reason is that Internet penetration is only 62% in India in 2021. Covid pandemic drove around 23 million people to use the internet to survive during th difficult times.

B.Government Policy

(i) Digital India initiative, in the August of 2014, Digital India Initiative was launched with a commitment of Rs. 1 lakh crores by the government to promote digitalisation of India. This initiative announced to the world and Indian youth that India was ready to go Digital.

(ii) Foreign Direct Investment- 100% FDI being allowed in the B2B and in the market place model is a boost to the startups seeking investments from the overseas investors.

(iii) Open Network for Digital Commerce(ONDC)- This move by the centre of creating a e-commerce that is backed by the government will go a long way in promoting the small retailers who wish to use technology and create an online presence. The new e-commerce policy is aimed at providing technological boost to the small retailers, with online retails sales surging(it was estimated USD 32.70 billion in 2018 (IBEF, 2021).

Conclusion

E-commerce not only survived during pandemic but achieved new heights.The trends of increase in investment by the giants business houses and increase in type of product added such as wellness,beauty, online education courses etc. with faster delivery will make it rule the economy.Students have high potentials in e-commerce both as a employee and as a entrepreneur.

बसन्त आया

प्रखर शुक्ल

निशा नववधूसी हो रही विदा
अम्बर कुछ लोहित हो चला
प्राची नवसुषमायुक्त सुशोभित
अरुण नवप्रभात का संदेश लाया
देखो सखी, बसन्त आया
सुवासित पवन तुम्हारा संस्पर्श लाया
प्रमुदित मन, प्रफुल्लित तन
आत्मा ने आनन्द को पाया
देखो सखी, बसन्त आया
पुष्प नवपराग परागित
देख भंवर का मन ललचाया
वसुधा बनी फिर नवयौवना
प्रेमी अम्बर देख मुसकाया
देखो सखी, बसन्त आया
प्रिये ! पीत रंग तुम पर भाया
देखो सखी, बसन्त आया

परमवीर डाक्टर्स

शिवांगी सिंह
एम०ए० पूर्वार्द्ध

कभी-कभी ऐसी कठिन परिस्थितियाँ आ जाती हैं कि तब हमें लगता है कि ईश्वर ने हमें अकारण ही दण्डित किया हो। तब हम सब विधाता को दोषी ठहराने लगते हैं। लेकिन तभी ऐसे वीर योद्धा अपनी जान की बाजी लगाकर हमें कठिन परिस्थितियों से निकालते हैं। तब हमें लगता है कि भगवान ने आसमां से जमीं पर आकर हमारी रक्षा की हो। ऐसे ही वीर डाक्टर दम्पत्ति की कहानी, जिन्होंने अपने बलिदान से पहले न जाने कितने लोगों की जान बचाई। कोरोना काल में हम सबकी सेवा करते बलिदान हुए परमवीर डाक्टर्स को प्रणाम।

मेरे घर के सामने वाली गली के सामने एक बंगला था। वहाँ एक नवदम्पत्ति रहते थे। वे दोनों डाक्टर थे और हमारे एक अच्छे पड़ोसी भी थे। वे दोनों रात-दिन बीमारों की सेवा करते थे, बड़े ही सेवाभाव से। एक दिन उनकी खुशी का ठिकाना न था क्योंकि उनके घर एक नन्हीं परी का जन्म हुआ था। वे दोनों बहुत खुश थे। धीरे-धीरे समय बीत जाता है और परी बड़ी हो जाती है और वह दोनों नवदम्पत्ति डाक्टर बालकनी के पास खिलाया करते। वह परी तो पूरे मोहल्ले में चिड़िया की तरह चहकती फिरती थी। वह मेरी बिटिया से भी अधिक प्रिय हो जाती। वह कब मेरे घर आने-जाने लगी, पता ही नहीं चला और एक दिन वो .... लेकिन एक दिन डॉक्टर दम्पत्ति इलाज करने शहर गए थे। जब दोनों वापस लौटे तो उनका स्वभाव बदल गया था और वे दोनों अजीब तरह का बर्ताव कर रहे थे। परी दौड़ती हुई उनके पास आती, तब वे दोनों उसे डाँट देते और दूर रहने को कहते। परी रोने लगती। इसी तरह दो-तीन दिन तक चलता रहा। लेकिन एक दिन डाक्टर दम्पत्ति मेरे पास आए और बोले- ''मैं आज तुम्हें परी को धरोहर के रूप में सौंप रहा हूँ, तुम इसे पालना और इसे इतना प्यार-दुलार देना कि इसे कभी हमारी याद न आए। इतना सुन मेरा कलेजा काँप गया और मेरी आँखों में आँसू आ गए। फिर वे दोनों बोले, जब हम दोनों देश की सेवा कर लौटेंगे, तब मेरी बिटिया वापस कर देना। इतना कहकर वह दोनों चले गए। पाँच साल की उस नन्हीं परी की देखभाल की जिम्मेदारी हमारी हो गई। लेकिन इतनी छोटी उम्र में बच्चे के लिये माता-पिता का स्नेह और दुलार से बढ़कर कोई खिलौना नहीं होता। मैंने उस नन्हीं परी की बहुत अच्छे से देखभाल की लेकिन वह रोज अपने माता-पिता के आने की प्रतीक्षा करती और पूछती कि मम्मा-पापा कब आयेंगे? एक दिन परी खेल रही थी। अचानक उसके हाथ समाचार पत्र लग जाता है। उसने देखा कि समाचार पत्र में उसके मम्मी-पापा की फोटो छपी है। वह दौड़ती हुई मेरे पास लेकर आई और बोली- 'मम्मा-पापा .... '। फिर क्या, मैं दंग रह गई उस समाचार को पढ़कर कि वो डाक्टर दम्पत्ति रोगियों की सेवा करते-करते गम्भीर बीमारी की चपेट में आकर अपनी जान गवाँ चुके थे।

इन डाक्टर्स के सेवाभाव, त्याग और समर्पण के लिए हम इन्हें प्रणाम करते हैं। ये वीर ही नहीं बल्कि परमवीर हैं। ऐसे परमवीर योद्धाओं के बलिदान को हम सब नमन करते हैं।

जय हिन्द! जय भारत!!

जी ना पायेंगे

प्रखर शुक्ल

पश्चिमी हवाएं भारतीय समाज को
झकझोर देती हैं
नए पत्ते बह जाना चाहते हैं
जड़ो से टूटकर जीने के लिए
टहनियाँ जोड़े रखने की चाहत में
पत्तो को लपक कर
वापस खींच लाती हैं
दिखाई देता है सामने
अन्तर पीढ़ी संघर्ष
सुनाई देता है तर्कों का शोर
टूट जाती हैं टहनियाँ अक्सर
पत्तों की चाहत में
या फिर पत्ते हवाओं के बहकाव में
विघटित हो जाता है समाज
इसीलिए टहनियाँ प्रयास करती हैं
रोकने का
जानती हैं वे
बिछड़े तो जी ना पायेंगे।

मिशन शक्ति से शक्तिवन : पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में

चन्द्रकिशोर शास्त्री
सहा० आचार्य, संस्कृत

सृष्टि में जीव कोशिका के साथ पादप कोशिका की व्यवस्था का अन्तर्निहित मर्म बहुत ही गहरा है। पादप (पेड़-पौधे) और जीव एक दूसरे के परस्पर अस्तित्व के पूरक हैं। वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण करके पर्यावरण में ऑक्सीजन यानि की हम जीवधारियों की प्राणवायु को अवमुक्त करते हैं। वृक्ष एक, लाभ अनेक......... इस कहावत का सही अर्थ यह है कि वृक्षों के तमाम गुणों को जानते हुए हममें से अधिकांश लोग अपने जीवन-काल में एक भी पौधा वृक्ष में रूपान्तरित नहीं कर पाते हैं। आज दुनिया की सबसे बड़ी विपदा ग्लोबल वार्मिंग है। विशेषज्ञों का मानना है कि कोविड-19 जैसी महामारियाँ अब कुछ अन्तराल के बाद पुनरावृत्ति कर सकती हैं। ***(स्रोत : दैनिक जागरण, पृ० ११, दिनांक 27 जून, 2022)***

पर्यावरण मानव जीवन का अविभाज्य अंग है। प्राणिमात्र की संजीवनी-शक्ति है। आज सम्पूर्ण विश्व में विकृत होते पर्यावरण और प्रदूषण से असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। विश्व के वैज्ञानिक / पर्यावरणविद् / बुद्धिजीवी सभी इस समस्या के समाधान में सतत् प्रयत्नशील हैं; किन्तु इस भयावह समस्या का कोई उत्तर मानव को सूझ नहीं रहा है। इस गम्भीर समस्या का मूल कारण मानव के भौतिक सुख-समृद्धि की महत्त्वाकांक्षा ही है। आज मनुष्य के द्वारा बर्बरतापूर्वक प्रकृति का शोषण किए जाने का परिणाम यह है कि पर्वत, नदी, चट्टानें एवं वन-सम्पदा आदि सभी विनाशोन्मुख की स्थिति में हैं। उद्योगों, कारखानों से निकलने वाले धुँए तथा विषैली गैसों के कारण मानव/मानवेत्तर प्राणियों का जीवन संकटग्रस्त होने लगा है। उपभोक्तावादी संस्कृति के परिवेश में प्रकृति उपभोग की वस्तु बन गई है। फलत: प्राकृतिक संक्षोभ के कारण कहीं भूकम्प, जलप्लावन, तूफान, झंझावात तो कहीं अकालवृष्टि, अतिवृष्टि, अनावृष्टिजनित दुर्भिक्ष और महामारी मानव जीवन को निरन्तर क्षति पहुँचा रही हैं। ऐसी अत्यन्त विषम परिस्थितियों में पर्यावरण प्रदूषण के समाधान की खोज में अतीत की ओर दृष्टि डालने पर यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि भारतीय चिन्तन परम्परा में निहित जीवन-दर्शन का अनुपालन ही उक्त समस्या के समाधान का एकमात्र विकल्प है। ***(स्रोत : अवधारणा बिन्दु, अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी, विषय - भारतीय जीवन दर्शन : वैश्विक पर्यावरण सन्तुलन के सन्दर्भ में। स्थान : लखनऊ, दिनांक 5 जून, 2022)***

साङ्ख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति और पुरुष के संयोग से अहंकार उत्पन्न होता है, अहंकार से महत्तत्व, महत्तत्व से पञ्चतन्मात्राएं तथा एकादश इन्द्रियाँ और पञ्च तन्मात्राओं से पञ्चमहाभूत (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) उत्पन्न होते हैं। उपरोक्त 17 तत्त्व (एकादश इन्द्रियाँ, पञ्चमहाभूत और महत्तत्व अर्थात् बुद्धि) मिल करके स्थूल शरीर का निर्माण करते हैं। जिसमें पञ्चमहाभूतों की अहम भूमिका होती है। पञ्चमहाभूतों के असन्तुलन से आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक आदि

त्रिविध ताप अर्थात् दु:ख उत्पन्न होते हैं। इन तीनों प्रकार के दु:खों अर्थात् तापों से छुटकारा प्राप्त कर लेने का नाम ही अत्यन्त पुरुषार्थ अथवा मोक्ष है– **''अथ त्रिविध दु:खात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थ:''** ***(साङ्ख्य सूत्र १/१)***।

पञ्चमहाभूतों के असन्तुलन का मुख्य कारण है– पर्यावरण का असन्तुलन अर्थात् मनुष्य द्वारा आवश्यकता से अधिक प्रकृति का दोहन। जबकि उपनिषदों में स्पष्ट कहा गया है कि जितनी आवश्यकता हो प्रकृति का उतना ही उपभोग करना चाहिए, बाकी दूसरे के लिए छोड़ देना चाहिए। क्योंकि प्रकाशमान इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी स्थावरजंगम स्वरूप वाला जगत् है, वह सब ईश्वर से परिव्याप्त है। उसे त्यागपूर्वक उपभोग करो, इसमें आसक्ति कथमपि उचित नहीं है–

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मां गृध:कश्विद् धनम्॥

(ईशावास्योपनिषद्–१)

उपरोक्त जितनी भी समस्याएं हैं, उन सबकी एक ही काट है– प्रकृति, पर्यावरण, पेड़–पौधे अर्थात् अधिक से अधिक पेड़–पौधों को लगाकर पर्यावरण का संरक्षण किया जाना। पेड़–पौधों का संरक्षण तथा संवर्द्धन तभी सम्भव है, जब उनका मातृवत् पालन–पोषण किया जाए और महिलाओं को यह नैसर्गिक गुण प्राप्त है। शायद इसी प्रयोजन से उ०प्र० की योगी सरकार द्वारा बाल–वन, युवा–वन तथा शक्तिवन की स्थापना की जा रही है और उसे मिशन शक्ति से जोड़ा जा रहा है। योगी सरकार महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान व सशक्तिकरण के लिए 'मिशन शक्ति' अभियान चला रही है और इस अभियान को भी पौधारोपण अभियान से जोड़ते हुए प्रत्येक जिले में एक–एक 'शक्ति–वन' की स्थापना करने जा रही है। इन वनों की खासियत यह होगी कि इसमें महिलाएं ही पौधारोपण करेंगी और इसकी देखभाल भी महिलाएं ही करेंगी। ***(स्रोत : दैनिक जागरण, पृ० ११, दिनांक : 27 जून, 2022)।***

नारी सशक्तिकरण को लेकर भारतीय चिन्तन प्रणाली प्राचीन काल से ही सजग रही है। कहा गया है कि यदि व्यक्ति को अपना, अपने परिवार का, समाज का तथा राष्ट्र का विकास करना है तो नारी का सम्मान करना ही पड़ेगा, क्योंकि जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहीं देवताओं का वास होता है और जहाँ नारी का सम्मान नहीं होता, वहाँ सारी क्रियाएं निष्फल हो जाती है–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते निष्फला: सर्वा: क्रिया:॥

(मनुस्मृति ३/५६)

'मिशन शक्ति' को 'शक्ति वन' से जोड़ना प्राकृतिक संयोग है। महाभारत आधारित महाकवि कालिदास विरचित विश्व प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में भी महर्षि कण्व ने शकुन्तला को वृक्षों के रोपण तथा सिंचन आदि कार्य में लगाते हैं;

क्योंकि महिलाओं का वृक्षों के साथ सहोदर अथवा पुत्रवत् स्नेह होता है। शकुन्तला की विदाई के समय महर्षि कण्व वृक्षों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि हे तपोवन के वृक्षों! जो शकुन्तला आपको जल पिलाए बिना अर्थात् जल से सींचे बिना स्वयं जल पीने की इच्छा नहीं करती थी, आभूषण प्रिय होने पर भी जो स्नेह के कारण तुम्हारे नव–किसलयों को नहीं तोड़ती थी। आपका प्रथम पुष्पोद्भव जिसके लिए उत्सव होता था, वही शकुन्तला आज अपने पति के गृह अर्थात् ससुराल जा रही है, अतः आप सब जाने की अनुमति प्रदान करें–

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलंयुष्मास्वपीतेषु या,
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः,
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्॥

(अभिज्ञान शाकुन्तलम् ४/९)

वनवृक्षों द्वारा भी न केवल जाने की अनुमति प्रदान की गई, बल्कि शकुन्तला के सौन्दर्य प्रसाधन के लिए किसी वृक्ष ने चन्द्रमा के समान श्वेत मांगलिक वस्त्रों का जोड़ा प्रदान किया। किसी वृक्ष ने चरणों के रंगने योग्य महावर निकाल कर दिया। इस प्रकार वृक्षाधिष्ठित वनदेवताओं ने अपने करपल्लवों से आभूषण प्रदान किए–

क्षौमं केन्चिदिन्दुपाण्डुतरुणा मांगल्यमाविष्कृतं,
निष्ठ्यूतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारसःकेन्चित।
अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितैर्द–
तान्याभरणानि तत्किसलयोद्भवेत्प्रतिद्वन्दभिः॥

(अभिज्ञान शाकुन्तलम् ४/५)

रघुवंश महाकाव्य के चतुर्दश सर्ग में भी प्रसंग आता है कि राजधर्म का निर्वहन करते हुए श्रीराम ने जब सीता का परित्याग किया था और लक्ष्मण द्वारा सीता को वाल्मीकि आश्रम के समीप छोड़ा गया था, तब सीता के विलाप को सुनकर महर्षि वाल्मीकि आए और सीता को शान्त कराते हुए आश्रम में रुकने हेतु आमन्त्रित किया। महर्षि वाल्मीकि सीता को शान्त कराते हुए कहते हैं कि ऋतुओं में पैदा होने वाले फल–फूल को तथा बिना जोते–बोए पैदा होने वाले पूजा योग्य अन्न को लाती हुई तथा मधुरभाषिणी मुनिकन्याएं नवीन दुःख वाली तुमको प्रसन्न करेंगी और तुम अपनी शक्ति के अनुरूप जल के घड़ों से आश्रम के छोटे–छोटे वृक्षों को सींच–सींच कर बढ़ाती हुई पुत्र उत्पत्ति के पहले दूध पीने वाले बच्चे के प्रेम को अवश्यमेव प्राप्त करोगी–

पुष्पं फलं चार्तवमाहरन्त्यो बीजं च बालेयमकृष्टरोहि।
विनोदविष्यन्ति नवाभिषंगामुदारवाचो मुनिकन्यकास्त्वाम्॥
पयोघटैराश्रमषालवृक्षान् संवर्द्धयन्ती स्वबलानुरूपैः।
असंशयं प्राक् तनयोपपत्तेःस्तनन्धयप्रीतिमवाप्स्यसि त्वम्॥

(रघुवंशम् १४/७७-७८)

इस प्रकार नारी शक्ति का पर्यावरण संवर्द्धन एवं संरक्षण के प्रति प्राचीन काल से ही सम्बन्ध रहा है और वर्तमान में उत्तर प्रदेश की योगी सरकार द्वारा 'मिशन शक्ति' का 'शक्ति वन' से जोड़ना भी प्राकृतिक संयोग ही कहा जा सकता है। इसके दो उद्देश्य हो सकते हैं- पहला नारी को सशक्त व स्वावलम्बी बनाना तथा दूसरा प्रकृति अर्थात् पर्यावरण का संरक्षण तथा संवर्द्धन क्योंकि किसी भी समाज के विकास का सीधा सम्बन्ध उस समाज की महिलाओं से जुड़ा होता है। नारी के बिना व्यक्ति, परिवार तथा समाज के विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। नारी जब शिक्षित व सशक्त होगी, तभी समाज और राष्ट्र का विकास होगा।

इसी प्रकार प्रकृति का संरक्षण मनुष्य के लिए बहुत ही जरूरी है, क्योंकि पर्यावरण संरक्षण के बिना मनुष्य का जीवन दूभर हो गया है। इसी उद्देश्य से ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, मन्धना, कानपुर में दिनांक 07 जुलाई, 2022 को महाविद्यालय की 'राष्ट्रीय सेवा योजना' इकाई द्वारा प्रकृति के संरक्षण में वृक्षारोपण कर महत्त्वपूर्ण योगदान दिया गया, ताकि शिक्षक व शिक्षार्थी (सभी लोग) सौम्य वातावरण वाले प्रदूषणमुक्त परिसर की शुद्ध ऑक्सीजन से युक्त खुली हवा में साँस ले सकें और भगवती सरस्वती को प्रणाम करते हुए अध्ययन/अध्यापन में संलग्न हो सकें।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

सभी लोग सुखी रहें, सभी निरोगी हों तथा सभी के कल्याणार्थ देखें। इस प्रकार किसी प्राणी को किसी भी प्रकार का कोई दुःख न हो। हे पारब्रह्म परमेश्वर! सभी को आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक इन त्रिविध तापों अर्थात् दुःखों से शान्ति प्रदान करें तथा विश्व का कल्याण हो। इसी कामना के साथ...........

Departmental Report : English Department

Bappa Adhikari
Asst. Professor, Department of English

The Department of English was established with the inception of Brahmavart P.G. College, Mandhana, Kanpur in 1970. It started its journey with few students and single faculty member, Dr. S. K. Ray. As time passes, it evolves, grows and becomes one of the major departments, by upholding sanctity of teaching environment, of Barhmavart P.G. College. Department of English focuses both literature as well as language areas. It has a rich collection of books in both departmental library and Central Library of Brahmavart P.G. College. It continues to nourish the young minds with imagination, aspiration and moral values. After successfully implementing NEP2020, it opens new vistas for students from miscellaneous background to study at Department of English. As in the globalized system, English language competency is very important to prosper, which fascinates students to join English Department to develop soft skill, and it continues to serve with utmost sincerity and diligence. After more than fifty years, it continues to perform its responsibility to the institution and society.

गीता का उपदेश विद्यार्थियों के लिए

अंकुर मिश्र
पुस्तकालयाध्यक्ष

विद्यार्थी जीवन का मुख्य प्रयोजन विद्यार्जन अथवा ज्ञानार्जन है। इस लक्ष्य की प्राप्ति का उत्तम मार्ग गीता बताती है– एकाग्रता और अभ्यास। कृष्ण का दिव्य सन्देश है कि मानसिक दुर्बलताओं को त्याग कर जीवन संग्राम में आने वाली चुनौतियों का धैर्य और साहसपूर्वक सामना करना। प्राय: देखा जाता है कि प्रयत्न करने पर किसी कर्म में सफलता तथा किसी कर्म में असफलता मिलने पर मन विचलित हो जाता है। कृष्ण कहते हैं कि सफलता अथवा असफलता, सुख अथवा दु:ख; ये तो एक–दूसरे के पूरक हैं। यह तो प्रकृति का नियम है। जैसे सर्दी–गर्मी अनित्य हैं, नित्य नहीं हैं। इसी प्रकार सुख–दु:ख भी अनित्य हैं। इनसे विचलित न होवो, इन्हें निश्चल भाव से सहन करो–

मात्रा स्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदु:खदा।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांतितिक्षस्व भारत॥

(गीता २/१४)

सुख–दु:ख आदि भौतिक अनुभूतियाँ हैं। इन्हें हे अर्जुन! अविचल भाव से सहन करो। क्योंकि–

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुर्षभ।
सुदु:खसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते॥

(गीता २/१५)

जो पुरुष इनसे विचलित नहीं होता, जो सुख और दु:ख में समान रहता है, जो धीर (धैर्यवान्) है, वह अमरत्व के योग्य है।

विद्यार्थी का जीवन योगी की भाँति है, इसलिए दिव्य गुरु, जगद्गुरु भगवान् कृष्ण कहते हैं–

बन्धुरात्माऽऽत्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जित:।

(गीता ६/६)

जिसने आत्मनियन्त्रण द्वारा अपने मन पर विजय प्राप्त कर ली, उसका मन उसका बन्धु है।

ऐसी स्थिति में मन को संयमित करके, कामनाओं का, स्वार्थ का त्याग करके एकान्त में एकाकी रहकर, परिग्रह का त्यागकर आशारहित होकर एकाग्रभाव से मन को आत्मा में एकाग्र करना चाहिए।

योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः।

एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः॥

(गीता ६/१०)

यह योगाभ्यास का प्रथम सोपान है। गीता में योग को '**योगः कर्मसु कौशलम्**' कहा गया है। यह कर्म में कुशलता तब प्राप्त होगी, जब महर्षि पतञ्जलि के शब्दों में '**योगश्चित्तवृत्ति निरोधः**'। चित्तवृत्तियों पर नियन्त्रण हो, तभी एकाग्रता सम्भव हो पायेगी। वह भी 'रहसि' एकान्त में अर्थात् जहाँ एकाग्रता में अवरोध उत्पन्न करने वाला वातावरण न हो। एकाकी– एकाग्रता के अभ्यास के लिए अकेला होना आवश्यक है अन्यथा एकाग्रता में बाधा उत्पन्न होगी।

शुचौ देश प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः।

नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम्॥

तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः।

उपविश्यासने युञ्ज्यायोगमात्मविशुद्धये॥

(गीता ६/११-१२)

शुद्ध (पवित्र) स्थान में अपने लिए बनाये हुए निश्चित आसन पर, जो न बहुत ऊँचा हो और न बहुत नीचा हो, कुश, मृगचर्म और वस्त्र बिछाकर बैठे और बैठकर मन को एकाग्र करके, इन्द्रिय तथा चित्त की क्रियाओं अर्थात् विचारों को संयमित करके आत्मशुद्धि के लिए योग का अभ्यास करना चाहिए। पवित्र स्थान– जब स्थान शुद्ध होगा तो विचार भी स्वतः पवित्र होंगे। आसन बहुत ऊँचा होने पर गिरने की संभावना हो सकती है, अधिक नीचा–गुफा इत्यादि जैसा न हो। ऐसे समतल आसन पर, कुश के ऊपर मृगचर्म तथा उसके ऊपर वस्त्र बिछाकर (अनुकूल) आसन पर बैठकर बाह्य विक्षोभों से मन को दूरकर दृढ़ता से इन्द्रियों द्वारा होने वाली क्रियाओं को संयमित कर अन्तःकरण की शुद्धि के लिए छात्ररूप योगी को अभ्यास करना चाहिए।

उस योगी के लिए शान्त मन वाला होना परम आवश्यक है क्योंकि मन तो बड़ा चञ्चल है, अर्जुन कहते हैं–

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।

तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥

(गीता ६/३४)

मन की प्रवृत्ति है किसी न किसी विषय का चिन्तन करना, साथ ही बलवान् भी है और दृढ़ भी है। यदि किसी विषय का दृढ़तापूर्वक चिन्तन करने लग जाये तो वायु के वेग के समान उसे रोक पाना दुष्कर हो जाता है। अर्जुन की व्यावहारिक यथार्थ युक्ति को स्वीकार करते हुए कृष्ण कहते हैं– हे महाबाहो! निःसन्देह मन चञ्चल और कठिनता से वश में किया जा सकने वाला है किन्तु हे

कुन्तीपुत्र! अभ्यास और वैराग्य के द्वारा उसे वश में किया जा सकता है। ***(गीता ६/३५)***

कृष्ण मनोवैज्ञानिक गुरु भी हैं, वे अपने शिष्य (अर्जुन) की मनोभवनाओं को भली प्रकार समझ कर उन्हें संयम और अनुशासन का उपदेश देते हैं क्योंकि बिना संयम के एकाग्रता सम्भव नहीं। मनुष्य का विकास उसके कर्मों से होता है। प्रत्येक कार्य का चाहे वह भला हो या बुरा हो, उसका परिणाम–फल मिलता ही है। इसलिए भगवान् स्वस्थ और साहसी बनकर जीवन की चुनौतियों का डटकर सामना करने की शिक्षा देते हैं। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क की संकल्पना की जा सकती है। स्वस्थ शरीर के लिए शुद्ध और सात्त्विक आहार अपेक्षित है।

हमारे दैनिक आहार–भोजन का प्रभाव हमारे शरीर के साथ–साथ मनोभावों तथा चरित्र पर भी पड़ता है। मनुष्यों को प्राय: रुचिकर लगने वाला आहार तीन प्रकार का होता है–

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रिय:।

(गीता १७/७)

आयु: सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीति विवर्धना:।
रस्या: स्निग्धा: स्थिरा हृद्या आहारा: सात्त्विकप्रिया:॥

(गीता १७/८)

आयु, प्राणशक्ति, शारीरिक शक्ति, आरोग्य, सुख और प्रीति अर्थात् मन की प्रसन्नता बढ़ाने वाले आहार, जो रस युक्त हों, चिकनाई युक्त हों (शुष्क न हों), पौष्टिक हों, तृप्ति करने वाले हों, ऐसे आहार सात्त्विक स्वभाव के लोगों को प्रिय होते हैं।

कट्वम्ललवणात्युष्ण तीक्ष्ण रुक्ष विदाहिन:।
आहारा राजसस्येष्टा दु:खशोकामयप्रदा:॥
यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्॥

(गीता १७/९-१०)

राजसी लोग तीखे, खट्टे, खारे, बहुत गर्म, चटपटे, सूखे और दाहकारक आहारों की इच्छा करते हैं। ये आहार रोग, दु:ख और शोक उत्पन्न करने वाले होते हैं। इन आहारों से व्यक्ति अपने शरीर में शक्ति का अनुभव तो करता है किन्तु परिणाम में रोग और दु:ख की ही प्राप्ति होती है। जो आहार ताजा नहीं है, जिसका स्वाद नष्ट हो गया है, जो बासी, दुर्गन्धियुक्त, जूठा और अपवित्र है, वह आहार तामसिक स्वभाव वाले व्यक्तियों को प्रिय होता है। वैसा ही भोजन उसे रुचिकर लगता है। इसलिए भोजन जो सात्त्विक, स्वास्थ्यवर्धक और सरस हो, वही छात्र के लिए उपयोगी है। न तो बहुत अधिक भोजन करना चाहिए, न भूखे रहकर उपवास

करना चाहिए क्योंकि अधिक भोजन करने से प्रमाद आलस्य आयेगा, उपवास से भी शरीर क्षीण होगा और एकाग्रता में अवरोध होगा।

मनुष्य के स्वभाव के अनुसार उसका आचरण बनता है। इसलिए आवश्यक है, शास्त्रसम्मत आदर्शों को जीवन में अपनायें। चाहे धार्मिक कार्य हों, पूजा-उपासना हो या दान हो, स्वार्थ की बुद्धि से अथवा प्रदर्शन के लिए कोई कार्य नहीं करना चाहिए। शरीर को कष्ट देना तप अथवा उपासना नहीं है, इससे हानि ही होगी क्योंकि-

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः।

दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः कामरागबलन्विताः॥

(गीता १७/५)

जो लोग अहङ्कार से काम तथा राग के बल से प्रेरित होकर अशास्त्रीय विधि से घोर तप करते हैं-

कर्षयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः।

मां चैवान्तशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान्॥

(गीता १७/६)

जो मूर्ख लोग शरीर में स्थित पञ्चभूतसमुदाय को तथा उसमें रहने वाले मुझे भी कष्ट देते हैं, ऐसे लोगों को आसुरी निश्चय वाला जान।

तप तीन प्रकार का होता है- मनसा, वाचा, कर्मणा। स्वार्थ की भावना तथा अहङ्कार से रहित, विचारों की पवित्रता से युक्त मानसिक तप है। सत्य, सौम्य तथा प्रिय एवं मधुर वाणी का प्रयोग वाचिक तप है। ऋजुता- सरल व्यवहार, ब्रह्मचर्य और करुणा से युक्त आचरण शारीरिक तप है। इसलिए भगवान् आदेश देते हैं-

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्।

ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते॥

(गीता १७/१४)

अर्थात् देवता, ब्राह्मण, गुरु और ज्ञानी की पूजा, पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा यह शारीरिक तप हैं।

वाचिक तप की व्याख्या भगवान् करते हैं-

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।

स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥

(गीता १७/१५)

अर्थात् जो वाक्य उद्वेग उत्पन्न करने वाला न हो, सत्य हो, प्रिय तथा हितकर हो, जो धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन और अभ्यास से प्राप्त हो, वह वाचिक तप कहा जाता है।

उक्त श्लोक में वाणी की सौम्यता का वर्णन किया गया। अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करने का एकमात्र वाणी ही ऐसा साधन है, जिससे वक्ता की मानसिक, बौद्धिक तथा शारीरिक शिष्टता का परिचय प्राप्त होता है। इसलिए वाणी पर संयम आवश्यक है। इसके द्वारा आत्मशक्ति का संचय कर आत्मविकास किया जा सकता है।

छात्र के लिए कायिक, वाचिक तथा मानसिक संयम आवश्यक है। संयम के द्वारा वह अनुशासन का पालन करेगा। चित्त की एकाग्रता के लिए संयम और अनुशासन की शिक्षा धर्म के माध्यम से दी गयी है। जो नियम धर्मशास्त्रों द्वारा विहित हैं, वे सभी मनुष्यों द्वारा पालनीय हैं। गीता कहती है–

तस्मात्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।

पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविनाशनाशनम्॥

(गीता ३/४१)

वास्तविक सुख आत्मसंयम से प्राप्त होता है यद्यपि वह प्रारम्भ में कठिन होता है। इसलिए हे अर्जुन! सर्वप्रथम इन्द्रियों को वश में करके ज्ञान और विवेक का नाश करने वाले कामरूपी पापी को नष्ट करो।

सूक्ष्मतया देखा जाए तो इन्द्रियों का महत्त्व शरीर में अधिक होता है। इन्द्रियों से श्रेष्ठ मन है, मन से श्रेष्ठ बुद्धि और बुद्धि से भी श्रेष्ठ आत्मा है ***(गीता ३/४२)***। यद्यपि मन बड़ा चञ्चल है, उसका क्षेत्र विस्तृत है, उस पर बुद्धि, विवेक–ज्ञान के द्वारा नियन्त्रण किया जा सकता है, बुद्धि से उत्कृष्ट तत्त्व है– चित् स्वरूप आत्मा। इसलिए जब–जब मन अस्थिर हो जाए, भागने का प्रयत्न करे, तब उसे रोककर संयमित करें और आत्मा में स्थिर करें–

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्।

ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत॥

(गीता ६/२६)

तात्पर्य है कि जब–जब मन अपने लक्ष्य से अतिरिक्त इधर–इधर विचरण करे, तब उसे संयत कर अन्य विषयों (भूत, भविष्य इत्यादि) से हटाकर एकाग्र करके जो संकल्प किया है, उसमें लगायें, यही एकाग्रता है।

योग गुरु, जगद्गुरु श्रीकृष्ण छात्र को सर्वप्रथम स्वस्थ रहने की शिक्षा देते है–

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु।

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥

(गीता ६/१७)

योग दु:ख को नाश करने वाला है। छात्र रूपी योगी को आहार-विहार में, अन्य क्रियाओं में, सोने और जागने में नियमित रहना चाहिए तथा '**न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन॥**' *(गीता ६/१६)*। छात्र को न बहुत सोने वाला, न अधिक जागने वाला होना चाहिए अन्यथा सोने-जागने तथा आहार-विहार में व्यतिक्रम होने से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अधिक सोने अथवा अधिक जागने पर पाचनतन्त्र सम्यक्तया संचालित नहीं हो सकेगा, जिसमें मन और शरीर दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा, फलत: एकाग्रता कैसे सम्भव होगी ? बिना एकाग्रता के जो लक्ष्य प्राप्ति का संकल्प है, उसके लिए किया जाने वाला अभ्यास कैसे हो पायेगा ? क्योंकि कर्म में कुशलता तो पुन:-पुन: अभ्यास से ही आयेगी। जो पाठ्य है अथवा ध्यातव्य है, ज्ञातव्य है, उसके लिए अभ्यास आवश्यक है। अभ्यास के लिए एकाग्रता आवश्यक है। '**मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धि निवेशय।**' के द्वारा मन को एकाग्र करने की शिक्षा देते हुए कहते हैं, उसे ही ज्ञान प्राप्त होगा, जिसकी गुरु के प्रति श्रद्धा होगी- '**श्रद्धावाल्ँलभते ज्ञानम्**' *(गीता ४/३९)*। शङ्कराचार्य के मत में आचार्य (गुरु) के द्वारा दिये गये शास्त्र विषयक ज्ञान को शिष्य यथावत् प्राप्त कर सकता है।

संक्षेप में उक्त बिन्दुओं के आधार पर गीता छात्र को संयम, अनुशासन तथा सदाचरण की शिक्षा देती हुई एकाग्रचित्त करके सर्वथा सक्षम-समर्थ बनाकर आयुर्वेद, धनुर्वेद हर प्रकार की शास्त्रीय तथा व्यावहारिक शिक्षा के द्वारा जीवन संग्राम में कर्मकुशल बनने का दृढ़ संकल्प देती है, जिसको आत्मसात कर छात्र स्वस्थ, सदाचारी, प्रतिभाशाली, आदर्श कार्यकुशल नागरिक बनकर समाज तथा राष्ट्र के विकास में सहभागी बन सकता है। यह नहीं कहा जा सकता कि गीता पुरातन ग्रन्थ है, उसमें दिए गए उपदेश वर्तमान समय में प्रासङ्गिक नहीं हैं क्योंकि गीता सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वदेशिक ग्रन्थ है। वह चिरनवीन है। इसके उपदेश सर्वदा सर्वथा सार्वजनीन् उपादेय हैं।

वृक्ष ही जीवन हैं

शिवांगी सिंह
एम०ए० पूर्वार्द्ध

एक गाँव था। वह बहुत ही सुन्दर था। चारों ओर से पेड़–पौधों से घिरा था। गाँव के किनारे एक नहर थी। गाँव के सारे बच्चे पेड़ों के चारों ओर खेला करते थे। रोहन और मोहन नाम के दो मित्र थे। वे दोनों ही घनिष्ट मित्र थे। वे दोनों साथ खेलते, साथ पढ़ने जाते थे। धीरे–धीरे वे दोनों बड़े हो गए। वे दोनों काम की तलाश में शहर जाते लेकिन दोनों को काम नहीं मिलता, वह वापस गाँव लौट आते। शहर जाते वक्त एक ट्रक में बहुत मोटी–मोटी लकड़ियाँ लदी थीं। यह देखकर रोहन मन में सोचने लगा कि क्यों न गाँव के पेड़ों से लकड़ियाँ काटकर शहर में बेचने लगें। फिर वह दोनों सूखी लकड़ियाँ काटते और शहर में बेच आते। इस तरह दोनों अपना जीवनयापन करने लगे। एक दिन मोहन लकड़ियाँ बेचने गया था कि वहाँ उसने देखा कि बहुत से लकड़हारे हरे–हरे पेड़ काटकर लाए थे। बहुत मोटे–मोटे तने थे, जो बहुत ऊँचे दामों में बिक रहे थे। यह देख मोहन के मन में भी हरे पेड़ काटने की सूझी और उसने रोहन से सारी बात बतायी। लेकिन रोहन हरे पेड़ काटने को राजी न हुआ। उसने अपने मित्र से कहा– भाई, हरे पेड़ काटना पाप है। इनमें भी आत्मा होती है। अगर इन्हें हरे–भरे काटेंगे तो दर्द होगा और वैसे भी सूखी लकड़ियों से ही हमारे परिवार का भरण–पोषण का खर्च चल जाता है। मैं तो हरे–भरे पेड़ काटने से तुम्हारा .... अलग रास्ते हो जाते। इस तरह रोहन जंगल से सूखी लकड़ियाँ बिनकर लाता और बाजार में बेच आता और मोहन हरे पेड़ काटकर चारी–छिपे शहर ले जाता और महँगे दामों में बेचकर आता। मोहन धीरे–धीरे कुछ दिनों बाद बहुत अमीर हो गया। उसके पास लक्जरी गाड़ियाँ, आलीशान मकान सबकुछ हो गया। लेकिन रोहन केवल घर का खर्च ही मुश्किल से निकाल पाता था। इस तरह अमीर और गरीब की कमाई में दोनों की दोस्ती डूब गई। मोहन रोज शहर जाता था। एक दिन वह शहर गया था और जब लौटा तो वह बीमार हो गया और उसे साँस लेने में तकलीफ होने लगी। फिर वह डॉक्टर के पास गया लेकिन डॉक्टर ने कहा कि इन्हें ऑक्सीजन की कमी हो गई है। जिससे इन्हें साँस लेने में तकलीफ हो रही है। मेरे पास ऑक्सीजन खत्म हो गया है। इन्हें दूसरे अस्पताल में ले जाओ। सब मोहन को लेकर एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल दौड़ने लगे लेकिन कहीं ऑक्सीजन नहीं मिला। थक–हारकर सब वापस घर लौट आए। मोहन बहुत अधिक बीमार हो चुका था। ये बात रोहन को पता चली तो वह दौड़ा हुआ आया, देखा कि साँस चल रही थी। उसने मोहन को गोद में उठाकर पीपल के पेड़ के नीचे लिटा दिया। पीपल का वृक्ष तेज गति से ऑक्सीजन छोड़ता है। जिससे मोहन शीघ्र ही फिर से साँस लेने लगा। यह सब देखकर मोहन के परिवार के लोगों ने रोहन को गले से लगा लिया और उसे धन्यवाद देने लगे। रोहन ने कहा कि धन्यवाद देना है तो मुझे नहीं इस पीपल के वृक्ष को दो क्योंकि मोहन को मैंने नहीं इस वृक्ष ने ऑक्सीजन दी है, जिसके कारण मोहन की जान बची। इतना

सुनकर मोहन रोहन के पैरों में गिर पड़ा और कहने लगा कि मुझे माफ कर दो मेरे दोस्त, मैंने तुम्हारा कहना नहीं माना और हरे-भरे पेड़ों को काटता रहा। यह इसी का श्राप है। मुझे माफ कर दो दोस्त, मैं आज से हरे-भरे पेड़ कभी नहीं काटूँगा और ना ही अपने सामने किसी को काटने दूँगा। दोनों फिर से गले लग जाते हैं। दोनों की दोस्ती फिर से हरी हो जाती है। मोहन अपने किए पाप दका प्रायश्चित करने के लिए एक हरा बगीचा तैयार करवाता है और उसी बगीचे के अन्दर झोपड़ी बनाकर रहने भी लगता है।

इसलिए दोस्तों आपसे भी यही निवेदन है कि हरे पेड़ कभी मत काटिए। वृक्ष ही जीवन हैं।

जय हिन्द! जय भारत!

हुंकार हो

गीता मिश्रा

न धर्म जाति के पंगे हों
न 1990 वाले दंगे हों
हर तरफ एक चित्कार हो
हे देश! तेरे लिए हर एक हुंकार हो।

फिर गौरवशाली इतिहास हो
न अकबर हुमायुँ का राज हो
महाराणा की हर तरफ मिसाल हो
हे देश! तेरे लिए हर एक हुंकार हो।

हर एक नागरिक समान हो
सबका एक आसमान हो
मेरे देश का हर तरफ सम्मान हो
हे देश! तेरे लिए हर एक हुंकार हो।

अमन-सौन्दर्य का साथ-साथ हो
न फिर अंग्रेजों का राज हो
मेरे देश के लिए मेरा प्राणान्त हो
हे देश! तेरे लिए हर एक हुंकार हो।

कृष्णा की गीता का बखान हो
मेरा देश महान हो
हर तरफ तेरा गुणगान हो
हे देश! तेरे लिए हर एक हुंकार हो।

समेटे हुए

प्रखर शुक्ल

जीवन के महत्त्वपूर्ण पड़ाव पर
अपने अन्दर अनगिनत सन्देह और प्रश्नों को समेटे हुए
भविष्य के प्रति सहमा हुआ
बीते हुए के क्षोभ को समेटे हुए
वर्तमान के धुंधलके में खोया हुआ
जीवन से नींद की ओर बढ़ते हुए
लड़ता हूँ रोज अपनों से ही
आदर्शों और हकीकतों के बीच
खुद को ठगते हुए
पुकारती है आत्मा कल के लिए ठहरता है मन आज को जीने के लिए
रह जाता हूँ आत्मा को दबाते हुए
जुटा नहीं पाता इतनी कुव्वत मैं
खुद को जीने के लिए
हो जाता हूँ ढेर धुंधलके में
चेहरे पर चेहरा चढ़ाते हुए
एक दिखावटी मुस्कान को ओढ़कर
व्यावहारिकता का स्वांग रचते हुए
चला जाता हूँ जीवन पथ पर
अनजाने ही मृत्यु की ओर
समाज के ढर्रे को निभाते हुए
कहाँ है समय मेरे पास यूँ कहकर
खुद की आँखों में धूल झोंकते हुए
नहीं है साहस खुद को टटोलने का
कैसे मान लूँ कहाँ वो कुव्वत मेरे में
जिक्र नहीं करता किसी से मैं
हूँ जीवन के इस पड़ाव पर खड़ा
धधकती हुई पीड़ा लिए
कहीं मैं रह न जाऊँ सोचकर
खुद को आधुनिक कहते हुए
चला जा रहा भीड़ पथ पर
सब कुछ अन्दर ही अन्दर समेटे हुए

राजनीति विज्ञान विभाग : एक दृष्टि

डॉ० पुष्पेन्द्र कुमार सिंह
प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

1970 में ब्रह्मावर्त परिक्षेत्र की पवित्र भूमि पर भारत की गौरवपूर्ण ज्ञान परम्परा को प्रवाहमान रखने के लक्ष्य से आबद्ध होकर स्थापित ब्रह्मावर्त डिग्री कालेज, मन्धना, कानपुर की स्थापना के साथ ही राजनीति शास्त्र के अध्ययन-अध्यापन का अनवरत् क्रम अद्यतन क्रियाशील है। विषय का अध्ययन विद्यार्थी के समग्र मानसिक एवं चिन्तन चक्षु को न केवल जागृत करता है वरन् भारतीय संस्कृति की पाण्डित्य परम्परा के यथार्थ परिदृश्य के अवलोकन के साथ-साथ सम्प्रति और भावी भारत के सम्यक् पथ को आलोकित करता है। अत्यन्त विशाल शास्त्रीय कलेवर का अनुशीलन विद्यार्थी के आत्म-तत्त्व एवं स्वाभाविक अभिरुचि के अनुरूप श्रेष्ठ मनुष्य तथा उत्तम नागरिक बनने का मार्ग प्रशस्त करता है।

राजनीतिशास्त्र की कक्षा में आने के बाद विषय का परिचय प्राप्त कर विद्यार्थी आश्चर्यचकित होकर रह जाता है, जब वह देखता है कि मानव जीवन के सम्यक् विकास के साथ-साथ 21वीं सदी के चुनौतीपूर्ण युग में भी विषय रोजगार प्रदान करने की अनिवार्य एवं असीम सामर्थ्य से युक्त है।

राजनीति शास्त्र विभाग आरम्भ से ही अपने उक्त दायित्वों के प्रति समर्पित रहा है तथा विषय का अध्ययन करके अनेक विद्यार्थियों ने सामाजिक एवं राजनीतिक परिक्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। अनेक विद्यार्थी राष्ट्र सेवा के विभिन्न मार्गों यथा- शिक्षण, रक्षा, नागरिक सेवा इत्यादि क्षेत्र में सफलतापूर्वक कार्य करते हुए अपने जीवन को सार्थक किया है। यह भी उल्लेखनीय है कि वर्ष 2001 से 2021 तक परास्नातक स्तर पर भी छात्रों का इस विषय के माध्यम से बहुत कुछ अर्जित करने का अवसर प्राप्त हुआ। विभाग के बहुत से विद्यार्थियों के नाम उल्लेखनीय सफलताएं अंकित हैं।

कोरोना महामारी के दौरान अनिवार्य की गयी सामाजिक दूरी में संचार तकनीक को बढ़ावा मिला और विभाग की सूचनाएं तथा शिक्षण एवं अध्ययन सामग्री के लिए तकनीकी अनुप्रयोग का सफलतापूर्वक उपयोग किया गया और वह शिक्षण प्रक्रिया का अंग बन चुकी है। छात्रों के लिए केन्द्रीय एवं विभागीय पुस्तकालय में उपलब्ध प्रचुर अध्ययन सामग्री के साथ ही जर्नल्स एवं मैगजीन की उपलब्धता है। विद्यार्थी महाविद्यालय की सह-शैक्षणिक गतिविधियाँ में बढ़चढ़कर सहभागिता करते हैं।

राजनीतिशास्त्र का विद्यार्थी यहाँ की शिक्षण शैली एवं कक्षा की संवाद शैली तथा जीवन के प्रति उसे प्राप्त हो रहे दृष्टिकोण से बहुत ही सकारात्मक, आशावान् एवं उत्साह के साथ अपने अध्ययन के प्रति समर्पित होता है। इस प्रकार विभाग अपने कर्त्तव्यबोध से स्व-आबद्ध रहते हुए अपने विद्यार्थियों में एक स्वाभाविक तेज उत्पन्न कर उनका समग्र रूपान्तरण करने में अनुरक्त है। इसी में इसकी स्वयं सार्थकता एवं आनन्द अन्तर्निहित है।

Departmental Report : Physics Department

Dr. Dinesh Kumar Singh
Department of Physics

The Physics Department of the Brahmavart P.G, College, Mandhana, Kanpur (UP), India was established in 2003 under self-finance scheme as one of the earliest Department under the Faculty of Science. The department started its activity at undergraduate level in and there is no looking back since then. The Department offers six semesters undergraduate B.Sc. course. The intake for the undergraduate programmes is 120.

The Department has rich teaching and research traditions. Presently there are 1 Associate Professor, 1 Assistant Professor, 1Guest in the Department. The department is well equipped with necessary facilities and resources for teaching, experiments, higher learning and research. The department also has a full-fledged Departmental Library well stocked with standard books and journals.

शिक्षाशास्त्र विभाग : रिपोर्ट

डॉ० अर्चना सक्सेना
शिक्षाशास्त्र विभाग

ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज मन्धना, कानपुर में विगत 20 वर्षों से स्नातक स्तर पर शिक्षाशास्त्र विभाग का संचालन सफलतापूर्वक हो रहा है। महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर शिक्षाशास्त्र विषय की कक्षायें नियमित रूप से संचालित होती है। कक्षाओं में पठन–पाठन का कार्य व्यवस्थित रूप से चलता है और कक्षा में विद्यार्थी पर्याप्त संख्या में उपस्थित रहते हैं।

छात्रों को पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकें उपलब्ध कराने के लिये विभागीय पुस्तकालय की भी व्यवस्था है।

पाठ्यक्रम को पढ़ने के साथ–साथ छात्र महाविद्यालय में होने वाली विभिन्न क्रियाओं और गतिविधियों में भी भाग लेते है क्योंकि यह क्रियायें छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है। इनके द्वारा छात्रों के अन्दर की प्रतिभा को बाहर लाया जा सकता है। छात्रों की विषय से सम्बन्धित प्रगति का सतत् मूल्यांकन करने के लिये प्रत्येक माह के अन्तिम सप्ताह में मासिक परीक्षा ली जाती है। कक्षा में छात्रों को प्रोजेक्ट तथा असाइनमेन्ट दिये जाते है, जिन्हें वे घर पर पूरा करके निश्चित समय पर कक्षा में जमा करते है।

समय–समय पर विषय से सम्बन्धित समस्याओं पर विचार विमर्श करने के लिये गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। बी०ए० तृतीय वर्ष के छात्रों को शिक्षकों के द्वारा व्यावसायिक मार्गदर्शन भी प्रदान किया जाता है। जिससे छात्र अपनी योग्यता और क्षमता के आधार पर अपने लिये उपयुक्त व्यवसाय या प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का चुनाव कर सके।

कोरोना काल में शिक्षाशास्त्र विषय की आनलाइन कक्षाओं का संचालन नियमित रूप से किया गया है।

संस्कृत विभाग : विभागीय रिपोर्ट

चन्द्रकिशोर शास्त्री
संस्कृत विभाग

सृष्टि के आदि में ॥ॐ॥ तथा ॥अथ॥ शब्द जब पितामह ब्रह्मा जी के मुख से नि:सरित हुए, तभी ब्रह्मा जी ने सृष्टि करने का सामर्थ्य प्राप्त किया। उपनिषदों का शुभारम्भ भी प्राय: ॥ॐ॥ शब्द से किया गया है, जिसका विशेष प्रयोजन मांगलिक तथा आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त करना है–

ओंकारश्चाथ शब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मण: पुरा।
कण्ठं भित्वा विनिर्यातौ तेनमांगलिकावुभौ॥

उत्तर प्रदेश राज्य के कानपुर शहर में मन्धना नामक कस्बे में 'ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज' नामक एक महाविद्यालय है, जिसके अन्तर्गत कई विभाग संचालित हैं, उन्हीं में से एक संस्कृत विभाग भी है, जहाँ वर्तमान में मैं एकमात्र प्राध्यापक हूँ। संस्कृत विभाग में अध्ययन–अध्यापन कार्य चरितार्थ हो, इस उद्देश्य से शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों वाणी की अधिष्ठात्री देवी माँ भगवती सरस्वती को नमन, वन्दन व प्रणाम करते हुए अध्ययन–अध्यापन में संलग्न होते हैं। विषय को हृदयङ्गम व चरितार्थ करने के प्रयोजन से विद्यार्थियों के साथ विषय पर मधुर संवाद करते हैं, जिससे कि विषयवस्तु पर सम्यक् प्रकाश डाला जा सके। पाठ्यवस्तु को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु औपचारिक कक्षाओं के साथ–साथ अनौपचारिक रूप से भी विद्यार्थियों की जिज्ञासा व कौतूहल को शान्त किया जाता है।

पारब्रह्म परमेश्वर एवं भगवती सरस्वती की असीम अनुकम्पा से छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा आयोजित अन्तर्महाविद्यालयीय संस्कृत निबन्ध प्रतियोगिता दिनांक 10 व 11 नवम्बर, 2021 को आयोजित हुई थी, जिसमें स्नातक स्तर पर बी०ए० द्वितीय वर्ष की छात्रा मानसी तिवारी ने प्रथम स्थान अर्जित किया था, जिस पर विश्वविद्यालय के मा० कुलपति महोदय द्वारा प्रमाणपत्र प्रदान कर आशीर्वाद तथा उत्साहवर्द्धन किया गया था।

विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त अपने मनोरथों को पूर्ण करें, इस उद्देश्य से उपनिषद् वाक्य का अनुसरण करते परमब्रह्म परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हे सर्वरक्षक परमेश्वर! आप हम दोनों (आचार्य एवं शिष्य) की साथ–साथ रक्षा करें, साथ–साथ पालन करें। हम दोनों साथ–साथ विद्याशक्ति को अर्जित करें। हम दोनों का अध्ययन–अध्यापन तेज से युक्त हो, हम दोनों के बीच विद्वेष न हो और हम दोनों ही आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक इन त्रिविध तापों से शान्ति प्राप्त करें, जिससे कि हम समाजोपयोगी तथा मांगलिक कार्यों में प्रवृत्त हों और राष्ट्र निर्माण में योगदान कर सकें–

ॐ सह नाववतु।
सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै॥
ॐ शान्ति:! शान्ति:!! शान्ति:!!!

हिन्दी विभाग : वार्षिक विवरण

डॉ० अमित कुमार दुबे
हिन्दी विभाग

ज्ञान के प्रकाश एवं विस्तार के लक्ष्य से आबद्ध होकर 1970 में स्थापित ब्रह्मावर्त डिग्री कालेज की स्थापना के साथ ही हिन्दी विभाग स्नातक की मान्यता प्राप्त हुई जबकि परास्नातक की मान्यता सन् 2000 में प्राप्त हुई। वर्तमान समय में महाविद्यालय के अन्तर्गत संचालित सभी संकायों के विभागों में छात्र एवं प्राध्यापक दोनों ही दृष्टियों से हिन्दी विभाग सबसे वृहद विभाग है। अद्यतन हिन्दी विभाग में अनुदानित व्यवस्था के अन्तर्गत दो प्राध्यापक डॉ० सुनीता सिंह (एसोसिएट प्रोफेसर), डॉ० अमित कुमार दुबे (असिस्टेण्ट प्रोफेसर) तथा स्ववित्तपोषित योजना के अन्तर्गत भी दो प्राध्यापक डॉ० सन्ध्या मिश्रा (असिस्टेण्ट प्रोफेसर) एवं डॉ० गीता दुबे (असिस्टेण्ट प्रोफेसर) कार्यरत् हैं। योग्य एवं अनुभवी प्राध्यापकों द्वारा अध्ययन और अध्यापन कार्य व्याख्यान, असाइनमेण्ट, ब्लैक बोर्ड, व्हाइट बोर्ड के साथ ही पावर प्वाइण्ट और आधुनिक तकनीकी माध्यमों से किया जाता है। इसके अतिरिक्त ई-मेल और व्हाट्सअप के माध्यम से भी अध्ययन सामग्री को उपलब्ध कराया जाता है। छात्रों का समूह बनाकर विशिष्ट विषयों पर परिचर्चा भी कराई जाती है। इन सबका परिणाम यह रहा है कि लगातार कुछ वर्षों से महाविद्यालय के छात्र छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर की मेरिट लिस्ट में अपना स्थान बनाए हुए हैं तथा वर्ष 2021 में विश्वविद्यालय की बी०ए० हिन्दी परीक्षा में महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के छात्र प्रखर शुक्ल ने सर्वोच्च अंक प्राप्त किए, जिसके लिए उसे विश्वविद्यालय द्वारा डॉ० बालमुकुन्द गुप्त स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। छात्रों में सृजनात्मकता के विकास के लिए विभाग द्वारा सृजनात्मक लेखन वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता है। शोध को मौलिक और स्तरीय बनाने के लिए छात्रों को विभिन्न विषयों पर शोध एवं लघु शोध करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाता है, उनका मार्गदर्शन किया जाता है। विभाग द्वारा उनके ज्ञान को विस्तृत फलक देने के लिए विभिन्न संगोष्ठी का आयोजन भी समय-समय पर किया जाता है। पाठ्यक्रम के अतिरिक्त छात्रों को यू०जी०सी० द्वारा आयोजित होने वाली नेट जे०आर०एफ० परीक्षा की अतिरिक्त कक्षाएं भी प्रदान की जाती हैं। विभाग के पास अपना पुस्तकालय भी है, जिसमें हिन्दी साहित्य की किताबों के अतिरिक्त अन्य भाषा के साहित्य की पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। साथ ही वर्तमान समय में प्रकाशित होने वाली हिन्दी साहित्य की सभी महत्त्वपूर्ण पत्रिकाएं भी उपलब्ध रहती हैं। छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करते हुए उसको लक्ष्य तक पहुँचाने हेतु योग्य बनाना तथा उसके अन्त:करण में मानवीय गुणों को विकसित कर जीवन जीने की कला सिखाते हुए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक बोध प्रदान करना ही विभाग का एकमात्र लक्ष्य है, जिससे कि छात्र सम्पूर्ण व्यक्ति बनकर समाज में अपनी भागीदारी प्रस्तुत कर सकें।

समाजशास्त्र विभाग : एक रिपोर्ट

डॉ० सरला त्रिपाठी
समाजशास्त्र विभाग

ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, मन्धना, कानपुर में विगत 22 वर्षों से स्नातक स्तर पर समाजशास्त्र विभाग का संचालन सफलतापूर्वक हो रहा है। महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर समाजशास्त्र विषय में पठन–पाठन का कार्य व्यवस्थित रूप से संचालित हो रहा है। कक्षा में विद्यार्थी पर्याप्त संख्या में उपस्थित रहते हैं। महाविद्यालय में छात्र–छात्राओं को विषयानुरूप विषयवस्तु के लिए पुस्तकालय की व्यवस्था उपलब्ध है। समय–समय पर महाविद्यालय में विभिन्न प्रकार की संगोष्ठियाँ, गतिविधियाँ एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराए जाते हैं। छात्रों के शैक्षिक विकास हेतु प्रोजेक्ट असाइनमेण्ट का प्रयोग किया जाता है।

समाज के समय का अध्ययन वैसे तो प्राचीनकाल से ही होता रहा है। लेकिन समाज के क्रमाधान अध्ययन के लिए समाजशास्त्र विषय के उदय को विशेष समय नहीं हुआ है। इसलिए इसे एक नवीन सामाजिक विज्ञान माना जाता है।

शिक्षा का समाजशास्त्र शिक्षण संस्थान द्वारा सामाजिक ढाँचों, अनुभव और अन्य परिणामों को निर्धारित करने के लिए तरीकों का अध्ययन है। यह विशेष रूप से उच्च अग्रनीक्ष व्यास और सत् शिक्षा साहित्य समाज की स्कूल समग्र शिक्षा।

Career Opportunity in the Field of Chemistry

Brajesh Kumar
Asst. Professor, Department of Chemistry

Like all science, Chemistry has a unique place in our pattern of understanding of the universe. it is the science of molecule and you are always enveloped of it. as you read the word,your eyes are using an organic compound (Retinal) to convert visible light into nerve impulses.

When you picked up this booklet,your muscles were doing chemical reaction on sugars to give you the energy that are needed.

There are excellent career in the field of Chemistry as-

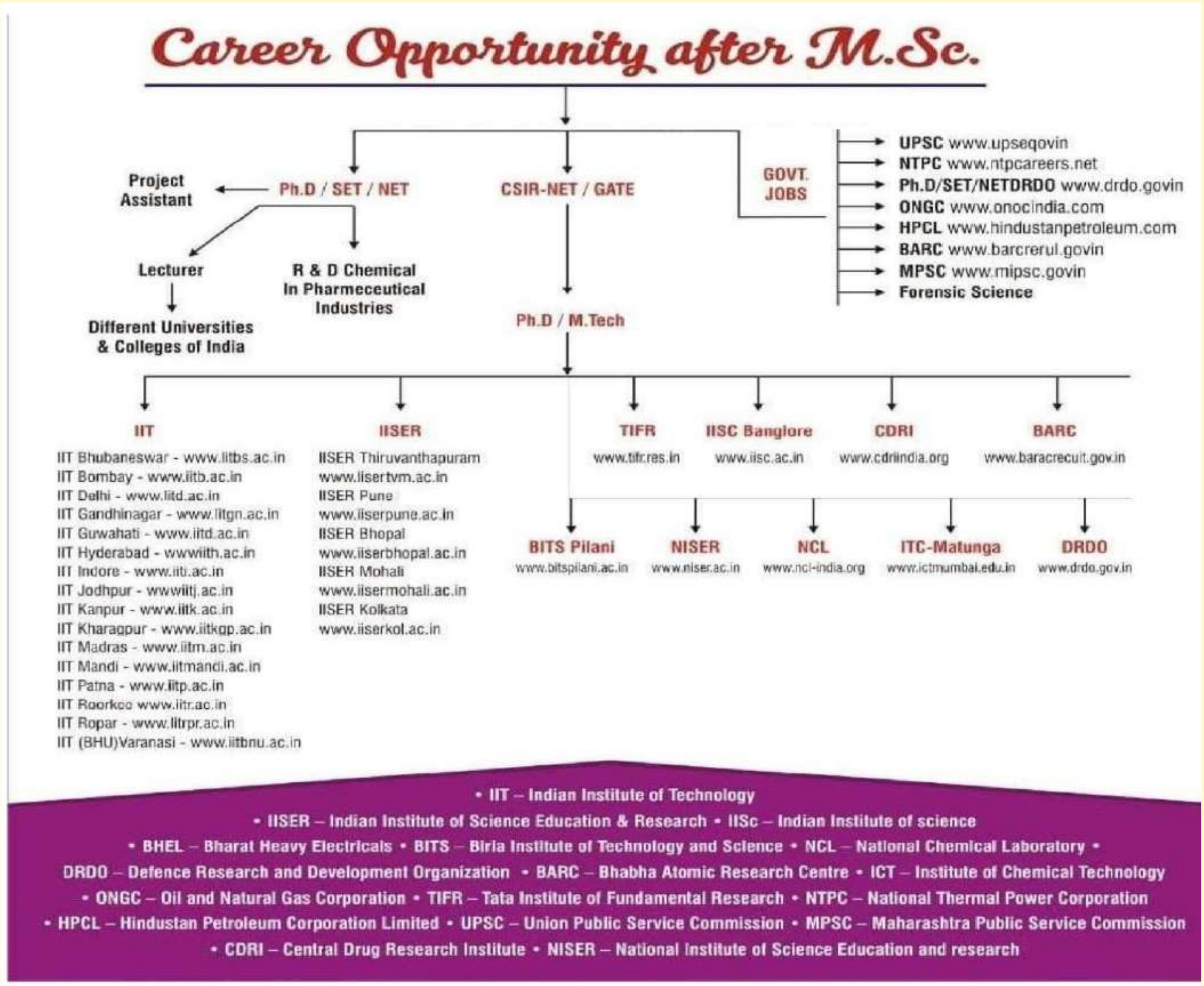

वनस्पति विज्ञान विभाग : एक अवलोकन

डॉ० दिव्या भदौरिया
वनस्पति विज्ञान विभाग

जिसे हम निर्जीव समझते हैं, वह जरूरी भी है और उसमें हैं जान।

उससे अपना जीवन कैसे बेहतर बनाए, बताता है वनस्पति विज्ञान॥

वनस्पति विज्ञान, जिसे अंग्रेजी में Botany कहा जाता है, की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के जिस शब्द से हुई है, उसका अर्थ होता है घास। यानि इसके अन्तर्गत पेड़-पौधों का अध्ययन किया जाता है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जैविक खेती के बढ़ते प्रचलन ने वनस्पति विज्ञान को जनजीवन के लिए और भी जरूरी बना दिया है।

ब्रह्मावर्त पी०जी० कालेज, मन्धना में वनस्पति विज्ञान का वर्ष 2003 से निरन्तर और नियमित रूप से अध्यापन आधुनिक तरीकों से किया जा रहा है। इसके अनुकूल और सकारात्मक परिणाम लगातार मिल रहे हैं। जिससे पता चलता है कि यहाँ की शिक्षा बच्चों के लिए न सिर्फ रोजगारपरक रही बल्कि उनके व्यक्तित्व में वैज्ञानिक सोच का समावेश भी हुआ है।

वनस्पति विज्ञान के अन्तर्गत विश्व में मिलने वाले हर तरह के पौधों के विभिन्न भागों जैसे कि- संरचना, वृद्धि एवं विकास, प्रजनन, बीमारियों, रासायनिक गुणों, आन्तरिक व वाह्य संरचना, श्वसन क्रिया, प्रकाश संश्लेषण द्वारा भोजन का निर्माण, जीवन चक्र आदि क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इसकी मुख्य रूप से दो शाखाएं होती हैं- जिसके अन्तर्गत विभिन्न विषय आते हैं- **1. व्यावहारिक या अनुप्रयुक्त वनस्पति विज्ञान-** पादप रोग विज्ञान, वन विद्या या वनवर्द्धन, जैव रसायन विज्ञान, उद्यान विज्ञान, पादप प्रजनन विज्ञान, सिल्वीकल्चर, फ्लोरीकल्चर, एग्रीकल्चर बॉटनी, फार्माकोग्नोसी, मृदा विज्ञान, पादप आनुवंशिकी **2. शुद्ध या मौलिक वनस्पति विज्ञान-** पादप भूगोल, शरीर क्रिया विज्ञानपारिस्थितिकी, भौणिकी, वर्गीकरण वनस्पति विज्ञान, आकारिकी, पादप जीवाश्म।

इनके अलावा भी वनस्पति विज्ञान में कई विषय हैं जैसे- जीवाणु विज्ञान, कवक विज्ञान, शैवाल विज्ञान, सरोवर विज्ञान, मृदा विज्ञान, विषाणु विज्ञान, विकिरण जीव विज्ञान, ऊतक संवर्द्धन आदि होते हैं। आजकल वनस्पतिशास्त्री भूमि पौधों की लगभग 4,10,000 प्रजातियों का अध्ययन करते हैं, जिनमें से कुछ 3,91,000 प्रजातियाँ संवहनी पौधे हैं (फूलों वाले पौधों की लगभग 3,69,000 प्रजातियों सहित), और लगभग 20,000 ब्रायोफाइट्स हैं। पौधे हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण, लाभदायक व हितकारी होते हैं। असल में इनके बिना जीवन की कल्पना कर पाना मुश्किल है। वनस्पतियाँ धरती पर जीवन का मूलभूत अंश है। वनस्पतियाँ ही ऑक्सीजन छोड़ती हैं। वनस्पतियों से ही मानव को एवं अन्य जन्तुओं को भोजन, रेशे, ईधन, औषधियाँ प्राप्त

होती हैं। प्रकाश संश्लेषण की क्रिया के द्वारा ही पौधे कार्बन डाई ऑक्साइड सोखते हैं। पेड़ों से प्राप्त लकड़ियों से ही मनुष्य अन्य संरचनाओं का निर्माण करता है।

महाविद्यालय में विद्यार्थियों को प्रोजेक्टर के द्वारा स्लाइड दिखाकर अध्यापन को और भी रुचिकर बनाया जाता है। इसके जरिए विद्यार्थियों को रंगीन चित्रों के द्वारा पेड़–पौधों के बारे में जानकारी पाने में अधिक सुविधा हो जाती है। यहाँ विद्यार्थियों के लिए केन्द्रीय पुस्तकालय के साथ–साथ विभागीय पुस्तकालय भी उपलब्ध है। विभाग में सभी आवश्यक उपकरणों से युक्त प्रयोगशाला विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है। शिक्षण कार्य के साथ कोर्स की तैयारी के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध करवाई जाती है तथा समय–समय पर कक्षाओं में टेस्ट, असाइनमेन्ट और मिड टर्म परीक्षाएं भी होती हैं।

Plants as a Proptectant Against the Insect Pests for Stored Grains

Dr. Sharda Tripathi
Department of Zoology

One of the most important global problem is protecting stored grains from insects. The insects are one of the most hazards in damaging the stored grains. For the control of insects insecticides are continuously used and their toxicity endangers health of animals and food consumers.

Our country is very rich in flora of medicinal and other indigenous plants.They are cheap, target-specific, less hazardous to mammals including human and domestic animals. These are bio-degradable in nature and therefore environment friendly and negative effects on human health led to a resurgence of interest in botanical insecticides due to their minimal costs and ecological side effects. The use of plant products having anti-insect effects and their importance as an alternative to the chemical compounds used in the elimination of insects in different ways, namely repellents, feeding deterrents/antifeedants, toxicants, growth retardants, chemosterilants, and attractants. Biological control is an eco-friendly approach and can be easily followed without any risk. .The potential benefits are that they are economical, environment friendly, effective and low toxicity to non-target organisms including humans. In the future, integration of plant products in pest management strategies would enhance sustainable organic agriculture and prevent stored grain loss in terms of both quality and quantity. It protects the organoleptic quality of food grains. Biological control of stored grain pests may prove effective, if used in appropriate manner, time and space. Aromatic plants have both medicinal and aromatic properties and contain a variety of volatile oils which have insecticidal, anti-feedant and repellent effects on insect pests. Botanical insecticides affect only target insects, not destroy beneficial natural enemies and provide residue-free food and safe environment. I therefore recommend using natural pesticides as an integrated insect pest management which can greatly reduce the use of synthetic insecticides.The only ecological based systematic approach of pest management practices can fulfil the needs of a quality conscious public of the present era.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020

डॉ० अर्चना सक्सेना
असि० प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग

नई शिक्षा नीति, 2020 भारत की नई शिक्षा नीति है। जिसे भारत सरकार ने 29 जुलाई, 2020 को घोषित किया। 1986 में जारी हुई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के 34 वर्ष के लम्बे इन्तजार के बाद शिक्षा में कई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। नई शिक्षा नीति के निर्माण के लिए जून 2017 में पूर्व इसरो (ISRO) प्रमुख डॉ० के० कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था। इस समिति ने मई 2019 में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा' प्रस्तुत किया था। नई शिक्षा नीति–2020 इसी समिति की रिपोर्ट पर आधारित है। नई शिक्षा नीति, 2020 की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन मन्त्रालय (एम०एच०आर०डी०) का नाम बदलकर शिक्षा मन्त्रालय कर दिया गया। नई शिक्षा नीति को एक बड़े सकारात्मक परिवर्तन के रूप में देखा जा रहा है।

नई शिक्षा नीति में 10+2 बोर्ड की संरचना को खत्म करके नई संरचना 5+3+3+4 को स्थापित किया गया है। जिसके तहत 5वीं तक प्री स्कूल ,6वीं से 8वीं तक मिड स्कूल, 9वीं से 12वीं हाईस्कूल और 12वीं से आगे ग्रेजुएशन हर डिग्री 4 साल की होगी। कक्षा 6 से ही वोकेशनल पाठ्यक्रम उपलब्ध हो सकेंगे। सभी ग्रेजुएशन कोर्स में 'मेजर' और 'माइनर' का डिवीजन होगा।

इस नई शिक्षा नीति का उद्देश्य 2030 तक 2 करोड़ स्कूली बच्चों को मुख्य धारा में वापस लाना है तथा साथ ही पूर्व विद्यालय से माध्यमिक स्तर तक शिक्षा का सार्वभौमिकरण करना है। नई शिक्षा नीति, 2020 का उद्देश्य 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुकूल स्कूल और कालेज की शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति में बदलना व प्रत्येक छात्र में निहित अद्वितीय क्षमताओं को सामने लाना है। इस शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य ऐसे उत्तम व्यक्तियों का विकास करना है, जो तर्कसंगत विचार करने वाले एवं कार्य करने में निपुण हो और उनमें नैतिक मूल्यों का समावेश हो।

एक अच्छी शैक्षणिक संस्था वह होती है, जिसमें प्रत्येक छात्र का स्वागत किया जाता है। साथ ही उसकी देखभाल की जाती है। प्रत्येक शिक्षा संस्थान का लक्ष्य सकारात्मक उपयोगी शिक्षा होनी चाहिए। साथ ही विभिन्न संस्थानों के मध्य एवं शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर परस्पर सहज जुड़ाव व समन्वय आवश्यक है। नई शिक्षा नीति, 2020 का दृष्टिकोण भारतीय मूल्यों से परिपूर्ण शिक्षा प्रणाली का विकास करना है, जो सभी को उच्चतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराकर भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाकर एक जीवंत एवं न्यायसंगत समाज में बदलने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेगी। नीति का विजन छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचार में बल्कि व्यवहार, बुद्धि एवं कार्यों में एवं साथ ही ज्ञान कौशल, मूल्यों एवं सोच में भी होना चाहिए, जो मानवाधिकारीों , स्थायी विकास व जीवनयापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो, ताकि वे सही अर्थों में वैश्विक नागरिक बन सकें।

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समिति : 2021-22

डॉ० दिव्या भदौरिया
सदस्य, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समिति

कानपुर के ब्रह्मावर्त डिग्री कालेज में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्राचार्य प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार ने कालेज में सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समिति का गठन कर उसके द्वारा समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम और प्रतियोगिताएं आयोजित करवाईं। इनमें मेहंदी और रंगोली प्रतियोगिताओं से लेकर पोस्टर राइटिंग, वाद-विवाद प्रतियोगिता और ज्वलंत समस्याओं पर संगोष्ठी तक आयोजित की गई हैं। इन प्रतियोगिताओं में बच्चों के उत्साहवर्द्धन के लिए न सिर्फ प्रथम, द्वितीय और तृतीय बल्कि सांत्वना पुरस्कारों को भी रखा गया।

इस क्रम में 13 नवम्बर 2021 को महाविद्यालय परिसर में मेहंदी और रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मेहंदी प्रतियोगिता में रागिनी प्रथम स्थान पर, अंजलि, ग्रेसी और आंचल द्वितीय स्थान पर, रिया तृतीय स्थान पर रहीं एवं शिवानी, रोशनी तथा शीतल ने सांत्वना पुरस्कार हासिल किया। वहीं रंगोली प्रतियोगिता में निर्णायक मण्डल के डॉ० पुष्पेन्द्र कुमार सिंह, डॉ० दिव्या भदौरिया तथा डॉ० रचना मिश्रा ने प्रथम स्थान पर ऋषिताम्बरी, आंचल तिवारी एवं अर्जिता सिंह के समूह को, द्वितीय स्थान पर अंजुल शर्मा, अंशिका वाजपेयी, अमिता, शिखा, रागिनी के समूह को, तृतीय स्थान पर प्रीति गौतम, अंकिता चौरसिया, प्रिया शुक्ला, आकांक्षा गुप्ता, प्रिया वर्मा के समूह को और सांत्वना पुरस्कार के लिए अनामिका शर्मा, खुशी यादव, मानसी गौतम के समूह को चुना। इसी तरह 27 नवम्बर 2021 को पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम स्थान पर नैन्सी पाल, द्वितीय स्थान पर अंशु यादव, तृतीय स्थान पर खुशी दीक्षित तथा खुशी यादव रहीं।

महाविद्यालय में 11 दिसम्बर 2021 को 'विश्वव्यापी महामारी पर लॉकडाउन उचित या अनुचित' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें पक्ष में प्रथम स्थान आकांक्षा गुप्ता ने, द्वितीय स्थान स्वाति कश्यप ने और तृतीय स्थान नैन्सी ने प्राप्त किया। विपक्ष में सुलभा तिवारी ने प्रथम स्थान, शिवांगी ने द्वितीय और साक्षी मौर्य ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसके बाद 18 दिसम्बर 2021 को कालेज ने आई०पी०एम० के साथ मिलकर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की। इसमें शिवांगी ने प्रथम स्थान, आराधना यादव ने द्वितीय स्थान और इलमा खतून ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इसी क्रम में 21 फरवरी 2022 को अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर वर्चुअल माध्यम से भाषण, वाद-विवाद, पोस्टर, स्लोगन राइटिंग, ड्राईंग-पेंटिंग आदि विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। साथ ही इस अवसर पर "भारतीय शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी चुनौतियाँ एवं अवसर" विषय पर विस्तार से चर्चा की गई तथा सभी को अपनी मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया गया। इसके बाद 31 मई को मिशन शक्ति के तहत विश्व तम्बाकू निषेधात्मक दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य रूप से डॉ० दिव्या भदौरिया, डॉ० रचना मिश्रा, डॉ० आरती दीक्षित, डॉ० शारदा त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त किए। छात्राओं में मुख्य रूप से शिवांगी सिंह, वैष्णवी वाजपेयी, मुस्कान वाजपेयी, आकांक्षा गुप्ता आदि ने विचार प्रकट किए।

विकार : विजय - ज्ञानी तथा अज्ञानी का भेद

मानसी तिवारी
बी०ए० द्वितीय वर्ष

अज्ञानी और ज्ञानी के जीवन में बड़ा भेद होता है। अनेकों बार दोनों की बाह्य क्रियाएं एक सी दिखाई देती हैं, फिर भी उसके परिणाम में बहुत भिन्नता होती है। ज्ञानी का जीवन प्रकाश लेकर चलता है जबकि अज्ञानी अन्धकार में ही भटकता है। ज्ञानी का लक्ष्य स्थिर होता है जबकि अज्ञानी का तो प्रथम कोई लक्ष्य होता ही नहीं, अगर हुआ तो भी विचारपूर्ण नहीं होता। उसका ध्येय ऐहिक सुख की प्राप्ति तक ही सीमित होता है, अन्तरंग को स्पर्श नहीं करती हुई वह साधना करता है। उससे भवभ्रमण और बन्धन की वृद्धि होती है। अत: श्रीमद्भगवद्गीता में एक श्लोक कहा गया है–

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः॥

(गीता २/६९)

अर्थात् सम्पूर्ण प्राणियों के लिए जो रात्रि है अर्थात् जिसमें ईश्वर से विमुखता है, उस रात्रि में संयमी पुरुष जागता है तथा जब सम्पूर्ण प्राणी जागते है अर्थात् भोग और संग्रह में लगे रहते हैं तो वह संयमी पुरुष के लिए रात्रि है।

ठीक उसी प्रकार ज्ञानी पुरुष दिन अथवा रात्रि की परवाह किए बिना ही अपने लक्ष्य की ओर निर्धारित होता रहता है तथा अज्ञानी पुरुष जो कि रात-दिन के भ्रमण जाल में ही फंसा रहता है तथा निर्धारित लक्ष्य को भूल जाता है।

ज्ञानी का अन्त:स्थल एक दिव्य आलोक से जगमगाता रहता है, वह सांसारिक कृत्य करता है, गृहस्थी के दायित्व को भी निभाता है और व्यवहार-व्यापार भी करता है, फिर भी अन्तर में ज्ञानालोक होने से वह उसमें लिप्त नहीं होता। उसकी क्रियाएं अनासक्त भाव से सहज रूप में ही होती रहती हैं। ज्ञानी और अज्ञानी में अन्तर दिखाते हुए कहा गया है–

जं अण्णारगो कम्मं, खवेड़ बहुवास कोडीहिं।
तं पाणी तिर्हि गुतो, खवेड़ ऊप्पास मेत्तीण॥

(आध्यात्मिक आलोक)

अज्ञानी जीव करोड़ों जन्मों से जितने कर्म खपाता है, ज्ञानीजन तीन युक्तियों से गुप्त होकर एक उच्छवास जितने अल्प समय में ही उतने कर्मों का क्षय कर डालता है। कहाँ करोड़ों जन्म और कहाँ एक उच्छवास जितना समय। इस अन्तर का कारण अन्तरंग में विद्यमान ज्ञ्ज्ञन का आलोक है। ज्ञानी पुरुष के संसार पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता है, वह जहाँ चाहे विचरण कर सकता है और जितनी दूर जाना चाहे जा सकता है। गंगा का पानी फैलकर सुखद वातावरण का निर्माण करता है। क्षारयुक्त, विषाक्त और गन्दे जल पर नियन्त्रण आवश्यक है।

अज्ञानी के साथ विषय, कषाय और बन्ध का विष फैलता है, जिससे उसकी आत्मा तो मलीन होती ही है, पर समाज वातावरण भी कलुषित बनता है। फोड़े के बढ़ने से हानि की आशंका की जाती है। स्वस्थ अंग के बढ़ने में कोई खतरा नहीं, वह

स्वस्थता का चिन्ह माना जाता है। गृहस्थ के जीवन में हिंसा और परिग्रहण का विष घुला रहता है।उसके विस्तार से विषवृद्धि की संभावना रहती है, अतएव उस नियन्त्रण की आवश्यकता है।

आगम तत्त्वं तु बुधः परीक्षते सर्वयत्नेन।

(सुभाषित रत्नानि)

अर्थात् जो बाह्य चिह्नों को देखता है, वह बालबुद्धि का है, जो वृत्ति का विचार करता है, वह मध्यम बुद्धि का है और जो सर्वयत्न से आगम तत्त्व की परीक्षा करता है, वह बुद्ध/ज्ञानी है।

उपर्युक्त श्लोक में ज्ञानी अथवा अज्ञानी का अन्तर स्पष्ट हो जाता है। अतः ज्ञानी व्यक्ति, वृत्ति का विचार करता है तथा अज्ञानी केवल बाह्य प्रवृत्तियों को देखकर ही खुश हो जाता है।

आचार्य भर्तृहरि ने नीतिशतक में ज्ञान को स्पष्ट करते हुए कहा–

हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा
सर्विभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम्।
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनं
येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः कस्तै सह स्पर्द्धते॥

(नीतिशतकम्)

अतः इस श्लोक का अर्थ यह है कि भले ही हम जीवन में कितने ही बड़े क्यूं न हो जाएं, हमें अपने धन का अभिमान नहीं करना चाहिए और धन की तुलना ज्ञान से नहीं करनी चाहिए तथा अगर हम किसी ज्ञानी व्यक्ति से मिलते हैं तो हमें अपना अहम त्याग कर उनसे ज्ञान अर्पण करना चाहिए। हमें सीखने में किसी भी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं दिखानी चाहिए तथा हमें अपने ज्ञान को भी दूसरों के साथ बाँटना चाहिए क्योंकि ज्ञान बाँटने से कई गुना बढ़ता है।

गृहस्थ के जीवन में हिंसा और परिग्रहण का विष घुला रहता है। उसका क्षेत्र सीमित नहीं किया गया। साधु के लिए ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है। उसका क्षेत्र सीमित नहीं किया गया है, बल्कि उसे एक स्थान पर न रहकर भ्रमण करते रहने का विधान किया गया है। उसे एक जगह नहीं टिकना है क्योंकि वह 'अनगार' है और उसे भ्रमण ही करते रहना है क्योंकि उसे भ्रमर की उपमा दी गई है–

बहता पानी निर्मला, पड़ा गंदीला होय।
साधु तो रमता भला, दाग लगे न कोय॥

साधु एक स्थान पर स्थिर हो जाएगा तो दूर–दूर तक ज्ञान प्रकाश की किरणें नहीं फैल सकेंगी। वह चलता–फिरता रहेगा तो जनसमाज को प्रकाश देगा, सत्प्रेरणा देगा। इस सामूहिक लाभ के साथ उसका निज का लाभ भी उसी में है कि वह स्थिर होकर एक जगह न रहे। एक जगह रहने से परिचय और सम्पर्क गाढ़ा होता है और उससे राग–द्वेष की वृत्तियाँ फलती–फूलती हैं।

अल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवद्विश्वतो मुखम्।
अस्तोभमनवयं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः॥

अर्थात् अल्पाक्षरता, असंदिग्धता, साररूप, सामान्य सिद्धान्त, निरर्थक शब्द का अभाव और दोषरहिततत्त्व, ये छह ज्ञानियों के लक्षण कहे गए हैं। आनन्द ने अपने गमनागमन की मर्यादा की थी। सम्यक् दृष्टि विद्या का ज्ञान होने से उसमें ज्ञान का प्रकाश नहीं था, वह क्षेत्रीय सीमा निर्धारित करके अपनी कामनाओं को मर्यादित करने का प्रयत्न करने लगा। उसने ऊर्ध्व दिशा, अधोदिशा और तिरछी दिशा में गमनागमन करने का प्रमाण बाँध लिया। जिस साधक ने दिशा परिमाण व्रत अंगीकृत किया है, उसे चलते–चलते रास्ते में सन्देह उत्पन्न हो जाए कि कहीं वह निर्धारित परिमाण का उल्लंघन तो नहीं कर रहा है? फिर भी वह आगे चलता जाए तो उसका चलना व्रत अतिचार है। ऐसा करने से व्रत में मलिनता उत्पन्न होती है। अगर साधक जानबूझ कर किसी कारण से परिमाण का उल्लंघन करता है तो अनाचार का सेवन करता है।

वस्तुतः साधक का दृष्टिकोण पापों पर विजय प्राप्त करना है। उन्होंने प्रत्येक संसारी जीव को अनादिकाल से अपने चंगुल में फँसा रखा है।

''जे तू जीत्योरे, ते हूँ जीतियो

पुरुष किस मुझ नाम''

(आध्यात्मिक आलोक)

विकारों पर विजय प्राप्त करने की साधना दो प्रकार की है **द्रव्य साधना** और **भव साधना**। दोनों साधनाएँ एक दूसरे से निरपेक्ष होकर नहीं चल सकती, परस्पर सापेक्ष ही होती है। जब अन्तरंग में भाव साधना होती है तो बाह्य चेष्टाएँ, क्रियाओं के रूप में वह व्यक्त हुए बिना नहीं रह सकती। अन्तर्मन के भाव बाह्य व्यवहार में छलक ही पड़ते हैं बल्कि सत्य तो यह है कि मनुष्य की बाह्य क्रियाएँ उसकी आन्तरिक भावना का प्रायः दृश्यमान रूप ही है।

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।

वृणते हि विमृश्य कारिणं गुणलुब्धाः स्वमेव संपदः॥

(कठोपनिषद)

अर्थात् अचानक आवेश में आकर बिना सोचे समझे कोई कार्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि विवेकशून्यता सबसे बड़ी विपत्तियों का घर होती हैं, इसके विपरीत जो व्यक्ति सोच समझकर कार्य करता है, लक्ष्मी स्वयं ही उसका वरण करती है।

अपरिचित पथ पर चलने वाले पथिक पहले चले पथिकों के पदचिह्न देखकर आगे बढ़ते हैं, जिससे वह भटक न जाएं। साधना मार्ग के बटोही को भी ऐसा ही करना चाहिए। पूर्वकालीन साधना के मार्ग पर चले हुए महापुरुषों के अनुभवों का हमें लाभ उठाना चाहिए।

महाजनस्य संसर्ग, कस्य नोन्नतिकारकः।

पद्मपत्रस्थितं तोयम्, धत्ते मुक्ताफलश्रियम॥

(सुभाषित रत्नानि)

अर्थात् उपर्युक्त श्लोक में ज्ञानी तथा अज्ञानी में भेद करते हुए बताया गया है कि महापुरुषों का सामीप्य किसके लिए लाभदायक नहीं होता, कमल के पत्ते पर पड़ी हुई पानी की बूँद भी मोती जैसी शोभा प्राप्त कर लेती है।

त्याग और तप की साधना से प्रमाद घटता है और प्रमाद के घटने से ज्ञान बढ़ता है, चरित्र की शोभा ज्ञान के बिना नहीं होती। ज्ञान और चरित्र का संगम ही सिद्धि प्राप्त करने का मार्ग है।

यद् दूर यद् दुराराध्यं यच्च दूरे व्यवस्थितम्।

तत्सर्वं तपसा साध्यं तपो हि दुरतिक्रमम॥

(सुभाषित रत्नानि)

अर्थात् जो दूर है, कष्टसाध्य है और दूर रहा हुआ है, वह सब तप से साध्य है। तप अवश्य करने योग्य है। अत: अन्तिम शब्दों में कहा जा सकता है कि विकार पर विजय साधना तथा आध्यात्मिक ज्ञान से किया जा सकता है।

देश-दुनिया की कुछ बेहतरीन कविताएं

संकलनकर्त्ता : डॉ० अमित कुमार दुबे
असि० प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

1. सबसे ख़तरनाक *(अवतार सिंह पाश)*

मेहनत की लूट सबसे ख़तरनाक नहीं होती
पुलिस की मार सबसे ख़तरनाक नहीं होती
गद्दारी और लोभ की मुट्ठी सबसे ख़तरनाक नहीं होती

बैठे-बिठाए पकड़े जाना बुरा तो है
सबसे ख़तरनाक नहीं होता
कपट के शोर में सही होते हुए दब जाना बुरा तो है
जुगनुओं की लौ में पढ़ना
मुट्ठियाँ भींच कर बस वक़्त निकाल लेना बुरा तो है
सबसे ख़तरनाक नहीं होता

सबसे ख़तरनाक होता है मुर्दा शांति से भर जाना
तड़प का न होना
सब कुछ सहन कर जाना
घर से निकलना काम पर
और काम से लौटकर घर आना

सबसे ख़तरनाक होता है
हमारे सपनों का मर जाना
सबसे ख़तरनाक वो घड़ी होती है
आपकी कलाई पर चलती हुई भी जो
आपकी नज़र में रुकी होती है

सबसे ख़तरनाक वो आँख होती है
जिसकी नज़र दुनिया को मोहब्बत से चूमना भूल जाती है
और जो एक घटिया दोहराव के क्रम में खो जाती है

सबसे ख़तरनाक वो गीत होता है
जो मरसिए की तरह पढ़ा जाता है
आमंकित लोगों के दरवाज़ों पर
गुंडों की तरह अकड़ता है
सबसे ख़तरनाक वो चाँद होता है
जो हर हत्याकांड के बाद
वीरान हुए आँगन में चढ़ता है
लेकिन आपकी आँखों में मिर्चों की तरह नहीं पड़ता

सबसे ख़तरनाक वो दिशा होती है
जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाए
और जिसकी मुर्दा घूप का कोई टुकड़ा
आपके जिस्म के पूरब में चुभ जाए

मेहनत की लूट सबसे ख़तरनाक नहीं होती
पुलिस की मार सबसे ख़तरनाक नहीं होती
गद्दारी और लोभ की मुट्ठी सबसे ख़तरनाक नहीं होती

2. जीवन की धूल *(केदारनाथ अग्रवाल)*

जो जीवन की धूल चाटकर बड़ा हुआ है,
तूफ़ानों से लड़ा और फिर खड़ा हुआ है,
जिसने सोने को खोदा, लोहा मोड़ा है, जो रवि के रथ का घोड़ा है,
वह जन मारे नहीं मरेगा,
नहीं मरेगा।

जो जीवन की आग जलाकर आग बना है,
फ़ौलादी पंजे फैलाये नाग बना है,
जिसने शोषण को तोड़ा, शासन मोड़ा है,
जो युग के रथ का घोड़ा है,
वह जन मारे नहीं मरेगा,
नहीं मरेगा।

3. कचोटती स्वतन्त्रता *(नाज़िम हिकमत)*

तुम खर्च करते हो अपनी आँखों का शऊर,
अपने हाथों की जगमगाती मेहनत,
और गूँधते हो आटा दर्जनों रोटियों के लिए काफी
मगर ख़ुद एक भी कौर नहीं चख पाते;
तुम स्वतंत्र हो दूसरों के वास्ते खटने के लिए
अमीरों को और अमीर बनाने के लिए
तुम स्वतंत्र हो।

जन्म लेते ही तुम्हारे चारों ओर
वे गाड़ देते हैं झूठ कातने वाली तकलियाँ
जो जीवनभर के लिए लपेट लेती हैं
तुम्हें झूठों के जाल में।
अपनी महान स्वतंत्रता के साथ
सिर पर हाथ धरे सोचते हो तुम
ज़मीर की आज़ादी के लिए तुम स्वतंत्र हो

तुम्हारा सिर ढुका हुआ मानो आधा कटा हो
मर्दन से,
लुंज–पुंज लटकती हैं बाँहें,
यहाँ–वहाँ भटकते हो तुम
अपनी महान स्वतंत्रता में:

बेरोज़गार रहने की आज़ादी के साथ
तुम स्वतंत्र हो।

तुम प्यार करते हो देश को
सबसे करीबी, सबसे क़ीमती चीज़ के समान।
लेकिन एक दिन, वे उसे बेच देंगे,
उदाहरण के लिए अमेरिका को
साथ में तुम्हें भी, तुम्हारी महान आज़ादी समेत
सैनिक अड्डा बन जाने के लिए तुम स्वतंत्र हो।

तुम दावा कर सकते हो कि तुम नहीं हो
महज़ एक औज़ार, एक संख्या या एक कड़ी
बल्कि एक जीता जागता इंसान
वे फौरन हथकड़ियाँ जड़ देंगे
तुम्हारी कलाइयों पर।
गिरफ्तार होने, जेल जाने
या फिर फाँसी चढ़ जाने के लिए
तुम स्वतंत्र हो।

नहीं है तुम्हारे जीवन में लोहे, काठ
या टाट का भी परदा;
स्वतंत्रता का वरण करने की कोई ज़रूरत नहीं :
तुम तो हो ही स्वतंत्र।
मगर तारों की छाँह के नीचे
इस किस्म की स्वतंत्रता कचोटती है।

4. देश कागज़ पर बना नक्शा नहीं होता *(सर्वेश्वर दयाल सक्सेना)*

यदि तुम्हारे घर के
एक कमरे में आग लगी हो

तो क्या तुम
दूसरे कमरे में सो सकते हो ?
यदि तुम्हारे घर के एक कमरे में लाशें सड़ रही हों
तो क्या तुम
दूसरे कमरे में प्रार्थना कर सकते हो ?
यदि हाँ
तो मुझे तुम से
कुछ नहीं कहना है।
देश कागज़ पर बना
नक्शा नहीं होता
कि एक हिस्से के फट जाने पर
बाकी हिस्से उसी तरह साबुत बने रहें
और नदियाँ, पर्वत शहर, गाँव
वैसे ही अपनी–अपनी जगह दिखें
अनमने रहें।
यदि तुम यह नहीं मानते
तो मुझे तुम्हारे साथ
नहीं रहना है।
इस दुनिया में आदमी की जान से बड़ा
कुछ भी नहीं है
न ईश्वर
न ज्ञान
न चुनाव
कागज़ पर लिखी कोई भी इबारत
फाड़ी जा सकती है
और ज़मीन की सात परतों के भीतर
गाड़ी जा सकती है।
जो विवेक
खड़ा हो लाशों को टेक
वह अन्धा है

जो शासन
चल रहा हो बन्दूक की नली से
हत्यारों का धन्धा है
यदि तुम नहीं मानते
तो मुझे
अब एक क्षण भी तुम्हे नहीं सहना है।
याद रखो
एक बच्चे की हत्या
एक औरत की मौत
एक आदमी का
गोलियों से चिथड़ा तन
किसी शासन का ही नहीं
सम्पूर्ण राष्ट्र का है पतन।
ऐसा ख़ून बहकर
धरती में जज़्ब नहीं होता
आकाश में फहराते झंडो को
काला करता है।
जिस धरती पर
फौजी बूटों के निशान हों
और उन पर
लाशें गिर रही हों
वह धरती
यदि तुम्हारे ख़ून में
आग बनकर नहीं दौड़ती
तो समझ लो
तुम बंजर हो गये हो–
तुम्हें यहाँ साँस लेने तक का नहीं है अधिकार
तुम्हारे लिए नहीं रहा अब यह संसार।
आख़िरी बात
बिल्कुल साफ़

किसी हत्यारे को
कभी मत करो माफ़
चाहे हो वह तुम्हारा यार
धर्म का ठेकेदार,
चाहे लोकतन्त्र का
स्वनामधन्य पहरेदार।

5. इंतिसाब[1] *(फ़ैज़ अहमद फ़ैज़)*

(इस कविता में आये शब्दों के अर्थ नीचे दिए गए हैं)

आज के नाम
और
आज के ग़म के नाम
आज का ग़म के : जिन्दगी के भरे गुलसिताँ से ख़फ़ा[2]
ज़र्द पत्तों का बन जो मेरा देस है
दर्द की अंजुमन[3] जो मेरा देस है
किलर्कों की अफसुर्दा[4] जानों के नाम
किर्मखुर्दा[5] दिलों और ज़बानों के नाम
पोस्टमैनों के नाम
तांगेवालों के नाम
रेलबानों के नाम
कारखानों के भोले जियालों के नाम
बादशाह-ए-जहाँ, वाली-ए-मासिवा[6], नायबुल्लाह-ए-फिल-अर्ज[7], दहकाँ[8] के नाम
जिसके ढोरों को जालिम हँका ले गये
जिसकी बेटी को डाकू उठा ले गये
हाथ भर खेत से एक अंगुश्त[9] पटवार ने काट ली है
दूसरी मालिये[10] के बहाने से सरकार ने काट ली है
जिसकी पग ज़ोर वालों के पावों तले

धज्जियाँ हो गई है
उन दुखी माओं के नाम
रात में जिनके बच्चे बिलखते हैं और
नींद की मार खए हुए बा़जुओं से संभलते नही
दुख बताते नहीं
मिन्नतों ज़ारियों [11] से बहलते नहीं

उन हसीनाओं के नाम
जिनकी आँखों के गुल
चिलमनों[12] और दरीचों[13] की बेलों पे बेकार खिलखिल के
मुर्झा गये हैं
उन ब्याहताओं के नाम
जिनके बदन
बे–मुहब्बत रियाकार[14] सेजों पे सज–सज के उकता गये हैं
बेवाओं के नाम
कटड़ि़यों[15] और गलियों, मुहल्लों के नाम
जिनकी नापाक ख़ाशाँक[16] से चाँद रातों
को आ–आ के करता है अक्सर वज़ू
जिनकी सायों में करती है आह–ओ–बुक़ा[17]
आँचलों की हिना
चूड़ि़यों की खनक
काकुलों[18] की महक
आरज़ूमंद सीनों की अपने पसीने में जलने की बू
तालिब इल्मों [19] के नाम
वो जो असहाब–ए–तब्ल–ओ–अलम[20]
के दरों पर किताब और क़लम
का तकाज़ा लिए, हाथ फैलाये
पहुँचे, मगर लौटकर घर न आये
वो: मासूम जो भोलेपन में

वहाँ अपने नन्हें चिरागों में लौ की लगन
ले के पहुँचे जहाँ
बँटे रहे थे घटाटोप, बेअंत रातों के साये

उन असीरों नाम
जिनके सीनों में फर्दा[21] के शहताब गौहर[22]
जेलखानों की शोरीदा[23] रातों की सरसर में
जल–जल के अंजुम–नुमा[24] हो गये हैं

आने वाले दिनों के सफीरों[25] के नाम
वो: जो खुश्बू–ए–गुल[26] की तरह
अपने पैग़ाम[27] पर खुद फिदा हो गये हैं।

1. रचना का समर्पण 2. खिन्न 3. सभा 4. उदास 5. कीड़ों का खाया हुआ 6. सर्वोच्च स्वामी 7. धरती पर स्वर्ग का प्रतिनिधित्व 8. किसान 9. उंगली भर 10. लगान 11. रोना 12. परदों 13. झरोखों 14. दुष्टतापूर्ण 15. मकान के समूह (पंजाबी) 16. कूड़ा–करकट 17. बैन 18. जुल्फ़ों 19. छात्रों 20. नगाड़े व पताका के मालिक 21. भविष्य 22. रात को चमकने वाले हीरे 23. परेशान 24. सितारों जैसे 25. दूनों 26. फूल की महक 27. संदेश

6. मैं सजा की माँग करता हूँ *(पाब्लो नेरुदा)*

अपने इन्हीं दिवंगतों के नाम पर
मैं सज़ा की माँग करता हूँ

जिन्होंने हमारे वतन को ख़ून से छिड़का, उनके लिए
मैं सज़ा की माँग करता हूँ
उसके लिए जिसके हुक़्म पर यह जुर्म किया गया
मैं माँगता हूँ सज़ा
उस ग़द्दार के लिए जो इन देहों पर कदम रखता
सत्ता में आया, मैं सज़ा की माँग करता हूँ

उन क्षमाशील लोगों के लिए जिन्होंने इस जुर्म को माफ़ किया
मैं सज़ा की माँग करता हूँ

मैं नहीं चाहता हर तरफ़ हाथ मिलाना और भूल जाना,
मैं उनके ख़ून सने हाथ नहीं छूना चाहता।
मैं सज़ा की माँग करता हूँ।
मैं नहीं चाहता वे कहीं राजदूत बना कर भेज दिए जायें,
न यहाँ देश में ढके-छुपे रह जायें
जब तक कि यह सब गुज़र नहीं जाता।
मैं चाहता हूँ न्याय हो
यहाँ खुली हवा में ठीक इसी जगह।

मैं उन्हें सज़ा दिये जाने की माँग करता हूँ।

7. कौन आज़ाद हुआ? *(अली सरदार जाफ़री)*

किसके माथे से गुलामी की सियाही छूटी?
मेरे सीने में दर्द है महकुमी का
मादरे हिंद के चेहरे पे उदासी है वही
कौन आज़ाद हुआ?

खंजर आज़ाद है सीने में उतरने के लिए
वर्दी आज़ाद है बेगुनाहों पर जुल्मो सितम के लिए
मौत आज़ाद है लाशों पर गुजरने के लिए
कौन आज़ाद हुआ?

काले बाज़ार में बदशक्ल चुड़ैलों की तरह
कीमतें काली दुकानों पर खड़ी रहती हैं
हर खरीदार की जेबों को कतरने के लिए
कौन आज़ाद हुआ?

कारखानों में लगा रहता है
साँस लेती हुयी लाशों का हुजूम
बीच में उनके फिरा करती है बेकारी भी
अपने खूंखार दहन खोले हुए
कौन आज़ाद हुआ ?

रोटियाँचकलों की कहवाये है
जिनको सरमाये के दल्लालों ने
नफाखोरी के झरोखों में सजा रखा है
बालियाँ धान की गेहूँ के सुनहरे गोशे
मिस्रो यूनान के मजबूर गुलामों की तरह
अजनबी देश के बाजारों में बिक जाते हैं
और बदबख्त किसानों की तड़पती हुई रूह
अपने अल्फाज में मुँह ढाँप के सो जाती है
कौन आज़ाद हुआ ?

8. उसको फाँसी दे दो *(गोरख पाण्डेय)*

वह कहता है उसको रोटी–कपड़ा चाहिए
बस इतना ही नहीं, उसे न्याय भी चाहिए
इस पर से उसको सचमुच आजादी चाहिए
उसको फाँसी दे दो।

वह कहता है उसको हमेशा काम चाहिए
सिर्फ काम ही नहीं, काम का फल भी चाहिए
काम और फल पर बेरोक दखल भी चाहिए
उसको फाँसी दे दो।

वह कहता है कोरा भाषण नहीं चाहिए

झूठे वादे हिंसक शासन नहीं चाहिए
भूखे–नंगे लोगों की जलती छाती पर
नकली जनतंत्री सिंहासन नहीं चाहिए
उसको फाँसी दे दो।

वह कहता है अब वह सबके साथ चलेगा
वह शोषण पर टिकी व्यवस्था को बदलेगा
किसी विदेशी ताकत से वह मिला हुआ है
उसकी इस गछ्दारी का फल तुरंत मिलेगा
आओ देशभक्त जल्लादों
पूंजी के विश्वस्त पियादों
उसको फाँसी दे दो।

9. तोड़ती पत्थर *(सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला')*

वह तोड़ती पत्थर;
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर–
वह तोड़ती पत्थर।

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय–कर्म–रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार–बार प्रहार;
सामने तरु–मालिका, अट्टालिका, प्राकार।

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन,
दिवा का तमतमाता रूप;

उठी झुलसती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गई,
प्राय: हुई दुपहर;
वह तोड़ती पत्थर।
देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।

एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा–
''मैं तोड़ती पत्थर।''

10. मुक्ति बोध – अब तक क्या किया *('अँधेरे में'' कविता का एक अंश)*

ओ मेरे आदर्शवादी मन,
ओ मेरे सिद्धान्तवादी मन,
अब तक क्या किया ?
जीवन क्या जिआ॥

उदरम्भरि बन अनात्म बन गये,
भूतों की शादी में कनात–से तन गये,
किसी व्यभिचारी के बन गये बिस्तर,
दु:खों के दाबगों को तमगों –सा पहना
अपने ही ख्यालों में दिन–रात रहना,

जिन्दगी निष्क्रिय बन गयी तलघर,
अब तक क्या किया ?
जीवन क्या जिआ ॥

बताओ तो किस-किस के लिए तुम दौड़ गये,
करुणा के दृश्यों से हाय ! मुँह मोड़ गये,
बन गये पत्थर,
बहुत-बहुत ज्यादा लिया,
दिया बहुत-बहुत कम,
मर गया देश, अरे जीवित रह गये तुम ॥
लोक-हित-पिता को घर से निकाल दिया,
जन-मन-करुणा-सी माँ को हँकाल दिया,
स्वार्थों के टेरियार कुत्तों को पाल लिया,
भावना के कर्तव्य-त्याग दिये,

हृदय के मन्तव्य-मार डाले।
बुद्धि का भाल ही फोड़ दिया,
तर्कों के हाथ उखाड़ दिये,
जम गये, जाम हुए, फँस गये,
अपने ही कीचड़ में धँस गये ॥
विवेक बघार डाला स्वार्थों के तेल में
आदर्श खा गये।
अब तक क्या किया ?
जीवन क्या जिआ
ज्यादा लिया और दिया बहुत-बहुत कम,
मर गया देश, अरे जीवित रह गये तुम........

11. 26 जनवरी, 15 अगस्त *(नागार्जुन)*

किसकी है जनवरी, किसका अगस्त है ?
कौन यहाँ सुखी है, कौन यहाँ मस्त है ?

सेठ है, शोषक है, नामी गला–काटू है
गालियाँ भी सुनता है, भारी थूक–चाटू है
चोर है, डाकू है, झूठा–मक्कार है
कातिल है, छलिया है, लुच्चा–लबार है
जैसे भी टिकट मिला
जहाँ भी टिकट मिला

शासन के घोड़े पर वह भी सवार है
उसी की जनवरी छब्बीस
उसी का पन्द्रह अगस्त है
बाकी सभी दुखी हैं, बाकी सभी पस्त हैं..........

कौन है खिला–खिला, बुढा–बुझा कौन है
कौन है बुलन्द आज, कौन आज मस्त है ?
खिला–खिला सेठ है, श्रमिक है बुझा–बुझा
मालिक बुलन्द है, कुली–मजूर पस्त है
सेठ यहाँ सुखी है, सेठ यहाँ मस्त है
उसकी है जनवरी, उसी का अगस्त है

पटना है, दिल्ली है, वहीं सब जुगाड़ है
मेला है, ठेला है, भारी भीड़ है
फ्रिज है, सोफा है, बिजली का झाड़ है
फैशन की ओट है, सब कुछ उघाड़ है
पब्लिक की पीठ पर बजट का पहाड़ है
गिन लो जी, गिन लो, गिन लो जी, गिन लो
मास्टर की छाती में कै ठो हाड़ है !
गिन लो जी, गिन लो, गिन लो जी, गिन लो
मजदूर की छाती में कै ठो हाड़ है !
गिन लो जी, गिन लो, गिन लो जी, गिन लो

बच्चे की छाती में कै ठो हाड़ है!
देख लो जी, देख लो जी, देख लो
पब्लिक की पीठ पर बजट का पहाड़ है!

पटना है, दिल्ली है, वहीं सब जुगाड़ है
मेला है, ठेला है, भारी भीड़ है
फ्रिज है, सोफा है, बिजली का झाड़ है
महल आबाद है, झोपड़ी उजाड़ है
गरीबों की बस्ती में उखाड़ है, पछाड़ है
धत तेरी, धत तेरी, कुच्छो नहीं। कुच्छो नहीं
ताड़ का तिल है, तिल का ताड़ है
ताड़ के पत्ते हैं, पत्तों के पंखें हैं

पंखों की ओट है, पंखों की आड़ है
कुच्छो नहीं, कुच्छो नहीं.......
ताड़ का तिल है, तिल का ताड़ है
पब्लिक की पीठ पर बजट का पहाड़ है

किसकी है जनवरी, किसका अगस्त है।
कौन यहाँ सुखी है, कौन यहाँ मस्त है।
सेठ ही सुखी है, सेठ ही मस्त है
मन्त्री ही सुखी है, मन्त्री ही मस्त है
उसी की है जनवरी, उसी का अगस्त है

12. राजेश जोशी

जो इस पागलपन में शामिल नहीं होंगे, मारे जायेंगे
कठघरे में खड़े कर दिए जायेंगे
जो विरोध में बोलेंगे
जो सच-सच बोलेंगे, मारे जायेंगे

बर्दाश्त नहीं किया जायेगा कि किसी की कमीज हो
उनकी कमीज से ज्यादा सफेद
कमीज पर जिनके दाग नहीं होंगे, मारे जायेंगे

धकेल दिए जायेंगे कला की दुनिया से बाहर
जो चारण नहीं होंगे
जो गुण नहीं गायेंगे, मारे जायेंगे

धर्म की ध्वजा उठाने जो नहीं जायेंगे जुलूस में
गोलियाँ भून डालेंगी उन्हें, काफिर करार दिए जायेंगे

सबसे बड़ा अपराध है इस समय निहत्थे और निरपराधी होना
जो अपराधी नहीं होंगे, मारे जायेंगे

13. बच्चे काम पर जा रहे हैं *(राजेश जोशी)*

कोहरे से ढकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं
सुबह सुबह

बच्चे काम पर जा रहे हैं
हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह
भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह
काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे ?

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग–बिरंगी किताबों को
क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने

क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें

क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन
खत्म हो गए हैं एकाएक
तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में ?
कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह
कि हैं सारी चीजें हस्बमामूल

पर दुनिया हजारों सड़कों से गुजरते हुए
बच्चे, बहुत छोटे-छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं

14. अदम गोंडवी

चाँद है ज़ेरे क़दम, सूरज खिलौना हो गया
हाँ, मगर इस दौर में किरदार बौना हो गया

शहर के दंगों में जब भी मुफलिसों के घर जले
कोठियों की लान का मंज़र सलौना हो गया

ढो रहा है आदमी काँधे पे ख़ुद का सलीब
ज़िन्दगी का फ़लसफ़ा जब बोझ ढोना हो गया
यूँ तो आदम के बदन पर भी था पत्तों का लिबास
रूह उरियाँ क्या हुई मौसम घिनौना हो गया

अब किसी लैला को भी इक़रारे-महबूबी नहीं
इस अहद में प्यार का सिम्बल तिकोना हो गया

15. लोहे का स्वाद *(धूमिल)*

शब्द किस तरह
कविता बनते हैं
इसे देखो
अक्षरों के बीच गिरे हुए
आदमी को पढ़ो

क्या तुमने सुना कि
यह लोहे की आवाज है
या मिट्टी में गिरे हुए
खून का रंग
लोहे का स्वाद
लोहार से मत पूछो
उस घोड़े से पूछो
जिसके मुँह में लगाम है

16. दुष्यंत कुमार

कहाँ तो तय था चराग़ाँ हर एक घर के लिए
कहाँ चराग़ मयस्सर नहीं शहर के लिए

यहाँ दरख़्तों के साये में धूप लगती है
चलो यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए
न हो क़मीज़ तो घुटनों से पेट ढक लेंगे
ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफ़र के लिए

ख़ुदा नहीं न सही आदमी का ख़्वाब सही
कोई हसीन नज़ारा तो है नज़र के लिए

वा मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता
मैं बेक़रार हूँ आवाज़ में असर के लिए

जियें तो अपने बग़ीचे में गुलमोहर के तले
मरें तो ग़ैर की गलियों में गुलमोहर के लिए

मयस्सर– उपलब्ध, मुतमइन– संतुष्ट, मुनासिब–ठीक

17. दुष्यंत कुमार

हो गई है पीर पर्वत–सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

अवगुण रूपी विष

प्रियंका
एम०ए० प्रथम वर्ष

"मनुष्य कितना निष्ठुर हो गया, अपनी इच्छाओं के मोह में।
सदा लीन रहता अहंकार, लोभ, छल जैसे अवगुणों की पूजा में॥"

मेरे इस लेख का उद्देश्य केवल लोगों में मानवता, प्रेम भावना, परोपकार और सहृदयता की भावना का विकास करना है। क्योंकि ये भावनायें आज लुप्त सी हो गयी हैं। विष से तो आप सभी भलीभांति परिचित हैं परन्तु मैं आपको अवगुण रूपी विष से परिचित कराना चाहती हूँ।

विष को यूँ तो हम आमतौर पर जहर भी कहते हैं। विष अर्थात् जो किसी के जीवन को नष्ट करने में सक्षम हो। मृत्यु की ओर ले जाने वाला पदार्थ विष कहलाता है। परन्तु क्या यह विष हमारे समाज और समाज के लोगों के लिए घातक है या फिर वो, जो हमारे समाज के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अहंकार, लोभ, इच्छा, कामना, पाप, द्वेष, छल, कपट, लड़ाई-झगड़ा, जाति-पाँति, भेदभाव, दलितों के प्रति हीनभावना आदि अवगुण रूपी विष जो आज हमारे समाज के लगभग हर व्यक्ति में व्याप्त है, यह अवगुण रूपी विष ज्यादा घातक है। जो समाज, समाज के लोगों और सम्पूर्ण राष्ट्र को पतन की ओर ले जाता है। आपका क्या मत है?

इन दोषों को अशिक्षित वर्ग में ही नहींअपितु इन दोषों को शिक्षित और सक्षम वर्ग के लोगों में भी देखने को मिलता है। ये अवगुण रूपी दोष (अहंकार, पाप, लोभ, छल) आधुनिक युग में ही नहीं अपितु प्राचीन समय से प्रचलित हैं। प्राचीन कथाओं में भी हमें इन्हीं सभी अवगुणों का स्वरूप प्राप्त होता है। जैसे-

हम बात रामायण की करें तो उसमें रावण इतना प्रकाण्ड पण्डित और विद्वान था परन्तु उसमें भी अहंकार, पाप, ठल, कपट आदि अवगुण कूट-कूट कर भरे थे। यदि इसी प्रकार हम बात महाभारत की करें तो उसमें भी कंस, दुर्योधन और शकुनि जैसे अहंकारी, पापी, लोभी और कपटी व्यक्ति थे परन्तु उस समय प्रभु राम और प्रभु श्रीकृष्ण जैसे महापुरुष उपस्थित थे, जिन्होंने उनका संहार किया और लोगों का कल्याण किया। आज के युग में तो ये महापुरुष आकर हमारे अवगुणों को दूर नहीं करेंगे। इसलिए आज हमें स्वयं ही इन दोषों को दूर करना होगा।

आधुनिक समय की बात करें तो स्थितियाँ इतनी विकृत हो गयी हैं कि जिन पर नियन्त्रण करना कठिन हो रहा है। आज प्रत्येक मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए ही कार्य करता है। बात करें चीन की तो चीन इतना सक्षम देश होते हुए भी अपने स्वार्थ के लिए किसी भी देश की सीमा रेखा को लांघ सकता है। उसी के कारण ही तो आज सम्पूर्ण विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा है। इसी प्रकार रूस और यूक्रेन की बात करें तो ये दोनों भी अपनी-अपनी सत्ता के लिए, ख्याति प्राप्ति के लिए एक-दूसरे पर घातक अस्त्रों-शस्त्रों से प्रहार कर रहे हैं, जिससे निर्दोष जनता का पतन होता है। यह विषय तो विश्व के स्तर का है परन्तु अहंकार, पाप, लोभ, छल, कपट जैसे अवगुण विश्व में ही नहीं बल्कि पारिवारिक स्तर पर भी मिलता है। आज परिवार के सदस्य लोभ, घमण्ड,

ईर्ष्या, सत्ता, पैसा और प्रशंसा के लिए अपने परिवार का भी हनन कर सकता है। समाज में रहने वाले अधिकतर व्यक्ति इन्हीं अवगुणों से ग्रसित हैं और उस अवगुण रूपी विष का नित्य पान कर रहे हैं, जो मनुष्य को उसके पतन के मार्ग की ओर अग्रसर कर रहा है। व्यक्ति अपने आप में ही व्यस्त है। ख्याति, धन, सम्पत्ति आदि को ही महत्व देने लगा है और व्यस्तता का जीवन व्यतीत करने लगा है। उसे लगता है कि वह स्वयं में ही सम्पूर्ण है, उसे किसी और की आवश्यकता ही नहीं है। वह किसी और के विषय में सोचता भी नहीं है।

मनुष्य इतना व्यस्त है कि वह अपने कर्तव्यों के प्रति विमुख हो गया है। उसका ध्यान समाज में पीड़ितों के प्रति, निर्धनों के प्रति, वृद्धों के प्रति आकर्षित ही नहीं होता है। वह अपनी ही इच्छाओं, अपने ही लोभ, अपने ही स्वार्थ में लिप्त रहता है। मनुष्य में व्याप्त उन अवगुणों को दूर करने और फिर से मनुष्यों में मनुष्यता का संचार करने के लिए हमारे राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपनी कविता के माध्यम से समाज के व्यक्तियों के समक्ष विशिष्ट पंक्तियाँ प्रस्तुत की हैं, जो इस प्रकार हैं–

''वह पशु प्रवृत्ति है, जो आप ही आप चरे।
और वह ही मनुष्य है, जो मनुष्य के लिए मरे॥''

इन पंक्तियों के माध्यम से इन्होंने व्यक्ति को अवगुणों को त्याग करने के लिए और मनुष्यता का मार्ग अपनाने के लिए कहा है। इनका कहना है कि प्रत्येक एक–दूसरे के प्रति प्रेम भावना, निस्वार्थ की भावना और सहृदयता की भावना रखें और सदैव एक–दूसरे की मदद के लिए तत्पर रहें।

सर्वप्रथम जब हम स्वयं एवं अपने परिवार से इन दोषों को मुक्त करने का श्रीगणेश करेंगे, तभी तो हम समाज के लोगों को भी इस अवगुण रूपी विष का पान करने से रोक सकते हैं। हमें पाप, स्वार्थ, छल, अहंकार आदि अवगुण रूपी विष का पान नहीं करना है। शिव जी ने तो लोक कल्याण के लिए विषपान कर विष को अपने कण्ठ में धारण किया था परन्तु हमें मनुष्यता और लोगों के हित के लिए इस अवगुण रूपी विष का पान नहीं करना है अपितु इसका त्याग करना है।

हालांकि समाज में कुछ अच्छे व्यक्ति भी हैं परन्तु बुरे व्यक्तियों की तुलना में बहुत कम हैं। इन अवगुणों को दूर करके ही हम अपने चरित्र का उत्थान कर सकते हैं और समाज तथा अपने देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर कर सकते हैं। जब व्यक्ति दृष्टिपरक न होकर सृष्टिपरक की भावना रखता है और सदैव वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का पालन करता है तो वह एक सच्चे मनुष्य की भांति जीवनयापन कर सकता है। अहंकार, पाप, लोभ आदि अवगुणों का त्याग करके दया, प्रेम, सद्भावना आदि भावों का विकास हम अपने हृदय में करें तो हमें जो आत्मिक सुख और आन्तरिक आनन्द की अनुभूति मिलती है, वह निश्चित ही कहीं और नहीं मिलती। इसलिए हमें इन अवगुणों का त्याग करके सद्भावों और सद्गुणों को अपनाकर अपने चरित्र का उत्थान करना चाहिए। जो अपने चारित्रिक गुणों से महकता है और मनुष्यता के प्रति निष्ठा रखता है, वही सच्चा मनुष्य है।

इसीलिए तो कहते है–

''इत्र की खुश्बू से तो सब महकते हैं,
कोई अपने चारित्रिक गुणों से भी महके।''

राष्ट्रीय नवजागरण और जयशंकर प्रसाद जी के नाटक

मानसी
एम०ए० द्वितीय वर्ष

स्वाधीनता प्राप्ति के लिए भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन निराशा, संघर्ष और पराधीनता के कुहासे को पार कर रहा था। कवियों ने राष्ट्रीय जागरण पर कम बल दिया। आधुनिक काव्यधारा का प्रथम उत्थान भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साहित्य आगमन से प्रारम्भ होता है। इसे पुनर्जागरणकाल भी कहते हैं। भारतेन्दु जी जनजागृति के अग्रदूत थे। प्रमुख प्रगतिवादी एवं आलोचक डॉ० रामविलास वर्मा का मत है– 'संसार के इतिहास में 19वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध का महत्वपूर्ण स्थान है– कार्लमार्क्स, डारविन, विद्यासागर आदि महापुरुषों के त्याग और तपस्या का वही काल था। इन वैज्ञानिकों, समाज सुधारकों और साहित्यिकों ने मानव–विकास के मार्ग में अड़ी हुई बड़ी–बड़ी शिलाओं को अपने सबल हाथों से ठेलकर एक ओर कर दिया।

राष्ट्रीयता के इसी युग में सबसे महत्वपूर्ण कार्य प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों ने किया। प्रसाद हिन्दी के आधुनिक जागरण युग के अग्रदूत थे। हिन्दी साहित्य सी विभिन्न जगमगा उठी। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। हिन्दी साहित्य की जिस विधा पर उन्होंने लेखनी चलाई, वही गरिमामण्डित हो पूर्ण प्रौढ़ता को प्राप्त हुई। प्रसाद जी के पहले दो नाटक जो 'चित्राधार' में संग्रहीत हैं, 'सज्जन' तथा 'प्रायश्चित'। 'सज्जन' में महाभारत की कथा है। दुर्योधन और उसके साथियों को गन्धर्वों ने पकड़ लिया था और उन्हें पाण्डवों ने मुक्त कराया, जिन्हें वह सताने गया था। वहाँ युधिष्ठिर की सज्जनता प्रस्तुत है। 'जन्मेजय का नागयज्ञ' पौराणिक कथा है, जो सैनिकों को स्वदेश प्रेम की प्रेरणा देती है।

'क्या सुना नहीं कुछ, अभी पड़े सोते हो,
क्यों निज स्वतन्त्रता की सज्जा खोते हो,
प्रतिहिंसा का विष तुम्हें नहीं चढ़ता क्या,
जब दर्प भरा अरि चढ़ा चला आता है,
जातीय मान के शव पर क्यों रोते हो,
क्यों निज स्वतन्त्रता की लज्जा खोते हो।'

'स्कन्दगुप्त' तो मानो राष्ट्रीयता का प्रतीक है। वह सम्राट न बनकर सैनिक बनना चाहता है। प्रसाद का दूसरा श्रेष्ठ नाटक 'चन्द्रगुप्त' है। इस नाटक में वीर भरे पड़े हैं। उनके सभी नाटक राष्ट्रीय भावना की लहरियों से नाचते दिखायी पड़ते हैं। वहीं दूसरी ओर 'मन्दाकिनी' अपने गीतों से उत्साह का संचार करती है–

पैरों के नीचे जलघर हो, बिजली से उनका खेल चले,
संकीर्ण कगारों के नीचे, शत्–शत् झरने बेमेल चले,
सन्नाटे में हो विकल पावन, पादप निज पद हों चूम रहे,
तब भी गिरीपथ का पथिक, ऊपर नीचे सब झेल चले।

प्रसाद ने प्राय: बौद्धकालीन तथा गुप्तकालीन पृष्ठभूमि पर ऐसे हिन्दू पात्रों को उभारा है, जिनके चरित्र का मूलस्वर राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक गौरव का प्रतिपादन करता है। नैतिक दृढ़ता, शौर्य, स्वदेशभक्ति, स्वाभिमान, राष्ट्रीयता की उदात्त भावनायें सर्वत्र मुखरित हुई हैं।

हास्य-व्यंग्य

प्रखर शुक्ल
एम०ए० प्रथम वर्ष

बीते दिनों एक शादी में शरीक हुआ, जब वहाँ से रवाना हुआ तो दस डिब्बे मिठाई और एक भारी पपीता पैक करके मेरे हाथ में थमा दिया गया। मैं आवाक था, मेरे हाथ काँपने लगे। जीवन में कई बरातें कीं पर इतना अधिक मिठाईरूपी सम्मान कभी न मिला। गला रुँध आया, मैं भावुक हो गया। मन ही मन कहा कि अपने अपने ही होते हैं। आज मुझे विश्वास हो गया था कि कुछ लोग धरती पर ऐसे भी हैं कि जो मिठाई के मोह से ऊपर उठ चुके हैं और खुशियाँ बाँटने के साथ-साथ मिठाई भी दिल खोलकर बाँटते हैं। उन महाशय के पैर छुए और उनके गले लगकर विदा ली तो आँखें सजल हो आयीं। भावनाओं के अतिरेक में डूबता-उतराता हुआ यात्रा पूरी करके घर पहुँचा। घर पहुँचकर डिब्बे खोलकर देखे तो सभी डिब्बों में एक-एक पूड़ी, पुआ और माठ था, मिठाई का कहीं नामोनिशान न था। चूँकि पपीते का वजन काफी अधिक था, इसलिए लेते समय मैं इसकी कल्पना भी न कर सका कि ये डिब्बे इतने हल्के हो सकते हैं। मैं आवाक रह गया, इतना बड़ा धोखा जीवन में कभी न मिला था। मैंने आकाश की ओर देखा और कहा-

माया तू बड़ी ठगिनी हम जानी।

लिखते हुए भी सदमें में हूँ, उबर नहीं पा रहा हूँ।

समुद्र

जूली
बी०एस-सी० द्वितीय वर्ष

समुद्र के किनारे जब एक तेज लहर आयी तो एक बच्चे की चप्पल ही अपने साथ बहा ले गयी, बच्चा रेत पर अंगुली से लिखता है- 'समुद्र चोर है'। उसी समुद्र के दूसरे किनारे पर एक मछुआरा बहुत सारी मछलियाँ पकड़ लेता है, वह उसी रेत पर लिखता है- 'समुद्र मेरा पालनहार है'। एक युवक समुद्र में डूबकर मर जाता है, उसकी माँ रेत पर लिखती है- 'समुद्र हत्यारा है'। एक दूसरे किनारे पर गरीब बूढ़ा टेढ़ी कमर लिए टहल रहा था, उसे एक बड़े सीप में एक अनमोल मोती मिल गया, वह रेत पर लिखता है- 'समुद्र बहुत दानी है'। अचानक एक बड़ी लहर आती है और सारा लिखा मिटाकर चली जाती है। मतलब समुद्र को कहीं कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोगों की उसके बारे में क्या राय है, वो हमेशा अपनी लहरों संग मस्त रहता है। अगर विशाल समुद्र बनना है तो जीवन में कभी भी फिजूल बातों पर ध्यान न दें, अपने उफान, उत्साह, शौर्य, पराक्रम और शान्ति समुद्र की भांति अपने हिसाब से तय करें। लोगों का क्या है, उनकी राय परिस्थितियों के हिसाब से बदलती रहती है। अगर मक्खी चाय में गिरे तो चाय फेंक देते हैं और अगर शुद्ध देशी घी में गिरे तो मक्खी को फेंक देते हैं।

जो जितनी 'सुविधा' में है, वो उतनी 'दुविधा' में है।

प्रेम

आशुतोष अवस्थी

प्रेम मिलता नहीं सहजता से
उसका सृजन करना पड़ता है
कभी खुद के सर को उनकी गोद में रख
उलझी जुल्फों को सुलझाना पड़ता है
पास में खड़ी हो फिर भी अनजान समझना पड़ता है
प्रेम हेतु मन की अभिलाषा को मौन रखना पड़ता है
पायल की आहट से ही सर को झुकाना पड़ता है
प्रेम में खुद को समर्पण करना पड़ता है
नयन भारी हों उससे पहले, अंक को समझना पड़ता है
प्रेम में मिल रही वेदना को, अर्चना समझना पड़ता है
प्रेम मिलता नहीं सहजता से
उसका सृजन करना पड़ता है

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

शिवानी राजपूत
बी०एस-सी० प्रथम वर्ष

बिन बेटी घर आंगन सूना है
वो ना हो तो हर त्यौहार अधूरा है
बेटी के होने से हर परिवार पूरा है
बेटी की कमी उससे पूछो जिसका हर अरमान अधूरा है
बेटी तो घर की शान होती है
उनसे ही तो पापा की जान होती है
जब आती है घर पर वह बेटी
तो खुशियों की बौछार होती है
बेटी तो वह कली है जो मुरझाने के बाद भी मुस्कुराती है
फिर भी ये दुनिया उसे क्यों रुलाती है
दहलीज से आई लक्ष्मी को तिजोरी में रखते हैं लोग
तिजोरी में रखी लक्ष्मी को पूजते हैं लोग
फिर पेट से जन्मी लक्ष्मी को क्यों ठुकरा देते हैं लोग

नया समाज

ऋषताम्बरी
बी०एस-सी० तृतीय वर्ष

शिक्षा का अभाव दिखता है उनकी नजरों में
जो बन्द है अभी तक, अन्धविश्वास के पिंजरों में॥
कुछ परिन्दे इनकी ही नस्ल के
भोग रहे सजा, इनके हस्र से
कुसूर उनका कुछ भी नहीं
बस जीना चाहते हैं वो भी फख्र से।
शिक्षा का अभाव दिखता है उनकी नजरों में
जो बन्द है अभी तक, अन्धविश्वास के पिंजरों में॥
हमारी बुलन्दियाँ आसमाँ तक जायेंगी
शायद एक दिन कुछ दुआयें रंग लायेंगी
यही सोचता है आज युवा का मन
कि किस कदर इस जंग से हम कामयाबी पायेंगे।
शिक्षा का अभाव दिखता है उनकी नजरों में
जो बन्द है अभी तक, अन्धविश्वास के पिंजरों में॥
बस डर लगता है कुछ नयी पीढ़ी से
जो भटक रही अपनी सफलता की सीढ़ी से
अपने साथ सुलगा रहे फेफड़े समाज के
सुलगा कर धुँआ अन्धविश्वास की बीड़ी से
शिक्षा का अभाव दिखता है उनकी नजरों में
जो बन्द है अभी तक, अन्धविश्वास के पिंजरों में॥

कोशिश कर

अनुष्का यादव
बी०एस-सी० प्रथम वर्ष

कोशिश कर, हल निकलेगा
आज नहीं तो, कल निकलेगा।
अर्जुन सा लक्ष्य रख, निशाना लगा
मरुस्थल से भी जल निकलेगा।
मेहनत कर, पौधों को पानी दे
बंजर में भी फिर, फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे
फौलाद का भी, बल निकलेगा।
सीने में उम्मीदों को जिंदा रख
समंदर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख, कुछ कर गुजरने की
जो कुछ थमा-थमा है, चल निकलेगा।
कोशिश कर, हल निकलेगा
आज नहीं तो, कल निकलेगा।

अनमोल वचन

मानसी
एम०ए० द्वितीय वर्ष

* संकट और विपत्ति के समय (दिनों) में इन चारों की परीक्षा हो जाती है- धीरज, धर्म, मित्र और पत्नी।
* दुष्ट की दुष्टता का सज्जनों पर उसी प्रकार असर नहीं होता जैसे वर्षा में ओलों और बूँदों के आधात का पर्वतों पर कोई असर नहीं होता।
* पाखण्ड और अविष से धर्मग्रन्थ और सद्ज्ञान उसी प्रकार लुप्त हो जाते हैं, जैसे वर्षा में घास उगने से पगडंडी वाले मार्ग लुप्त हो जाते हैं।
* तुच्छ व संकीर्ण हृदय के लोग धन पाकर वैसे ही इतराने लगते हैं।
* दुष्ट मनुष्य का प्रेम और व्यवहार स्थिर नहीं होता जैसे आकाश में चमकने वाली बिजली स्थिर नहीं होती।

पावस ऋतु

रोशनी
बी०एस-सी० प्रथम वर्ष

तपती धरा की करुण पुकार सुन
जब मेघ गगन में आते हैं
उस शीतल मनोरम दृश्य को देख
प्राणी पुनर्जीवन पा जाते हैं।
ज्येष्ठ मास की भीषण गर्मी
प्रचण्ड धूप में लू चल रही
तन ऊष्णता से व्याकुल है
धरा सूचा कर जल रही।
चहुँ ओर जल का अभाव हुआ
प्राणियों में त्राहिमाम् हुआ
आषाढ़ मास ने किया आगमन
जन में आशा का हुआ समागम
आशा का संचार हुआ
वायु के शीतल झकोरों से
मन की पीड़ा का नाश हुआ।
मेघ शून्य में उमड़ने लगे
सूखे जलाशय भरने लगे
प्राणियों ने नवजीवन पाया
पावस ऋतु का मास आया।
वृक्षों में हरियाली, धरा में खुशहाली छायी
आयी ऋतुओं की रानी वर्षा आयी।

Love

Ashish Kamal
B.Sc. III Year

Love is the cure for all our ills,
Love gives life and hatred kills,
The temperature are rising, the heat is on
The one who loves is the one who chills.
Love makes us human or we are animals
Without love, we shall become cannibals
Sharing and caring are the essence of our life
Running after wealth, name and fame
We forget to love, we are always poor
Love is the cure for all our ills.

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति

1.	श्री प्रेम नारायण गुप्त	अध्यक्ष
2.	श्री महेन्द्र कुमार शुक्ल	उपाध्यक्ष
3.	श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'	सचिव/मन्त्री/प्रबन्धक
4.	श्री राकेश कुमार मिश्र	संयुक्त मन्त्री
5.	डॉ० अजीत राय सब्बरवाल	सदस्य
6.	श्री शंकर दत्त त्रिपाठी 'एडवोकेट'	सदस्य
7.	श्री उमाकान्त द्विवेदी	सदस्य
8.	श्री सुभाष चन्द्र द्विवेदी	सदस्य
9.	श्री बाँके बिहारी शुक्ल	सदस्य
10.	श्री सुधीर कुमार मिश्र	सदस्य
11.	श्री महेश चन्द्र मिश्र	सदस्य
12.	श्री रमन कुमार मिश्र	सदस्य

श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल 'एडवोकेट'
सचिव/मन्त्री/प्रबन्धक

महाविद्यालय की झलकियाँ

आयोग से चयनित प्राचार्य प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार कार्यभार ग्रहण करने से पूर्व माँ सरस्वती से आशीर्वाद लेते हुए

महाविद्यालय में नवनियुक्त प्राचार्य प्रो० (डॉ०) वी०के० कटियार का स्वागत

राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर के उद्घाटन सत्र का शुभारमभ करते प्राचार्य जी

राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते प्राचार्य जी

महाविद्यालय के स्नातक के छात्र प्रखर शुक्ल वि०वि० दीक्षान्त समारोह-2021 में माननीय राज्यपाल से स्वर्ण पदक प्राप्त करते हुए

महाविद्यालय के स्नातक के छात्र प्रखर शुक्ल वि०वि० दीक्षान्त समारोह-2021 में माननीय राज्यपाल से प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए

महाविद्यालय की छात्रा कु० मानसी को अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिता में संस्कृत लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

NEP-2020 के अन्तर्गत छात्र-अभिविन्यास कार्यक्रम